राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 38 अंक 1 अप्रैल 2015 मूल्य 5 रु. पृष्ठ 32

पटना में 26 मार्च को विधान सभा घेराव के दौरान अभाविप कार्यकर्ताओं पर लाठीचार्ज करती पुलिस (बाएं)
बिहार बंद के दौरान 30 मार्च को राजेन्द्र नगर टर्मिनल पर ट्रेन रोकते कार्यकर्ता

दिल्ली विश्वविद्यालय की मांगों को लेकर हुई महारैली को संबोधित करते अभाविप के
राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री श्रीनिवास

वोसी (WOSY) के तत्वावधान में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय युवा सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करतीं विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज। साथ में श्री सुनील आंबेकर तथा वोसी की अध्यक्षा डा. रश्मी सिंह

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, सिलचर में दो दिवसीय युवा सम्मेलन के मंच पर अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आंबेकर व राष्ट्रीय महामंत्री श्रीहरि बोरिकर

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

संपादक मण्डल

आशुतोष

अवनीश सिंह

अभिषेक रंजन

संजीव कुमार सिन्हा

फोन : 011-23216298

ई-मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com

ब्लॉग :chhatrashaktiabvp.com

वेबसाईट :www.abvp.org

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए राजकुमार शर्मा द्वारा बी-50, विद्यार्थी सदन, क्रिश्चियन कॉलोनी, निकट पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली - 110007 से प्रकाशित एवं मॉडर्न प्रिन्टर्स, के-30, नवीन शाहदरा, दिल्ली - 110032 द्वारा मुद्रित।

संपादकीय कार्यालय

''छात्रशक्ति भवन''

26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,

नई दिल्ली - 110002.

अनुक्रमणिका

विषय	पृ. सं.
संपादकीय	4
बदहाल शिक्षा व्यवस्था को लेकर पटना में विधान सभा घेराव	6
'साविष्कार' (i-Fast 2015) भोपाल में संपन्न	8
हमारे प्रेरणा स्रोत स्व. नारायणराव भंडारी – अरुण भाई यार्दी	11
विश्व में तेजी से बढ़ती हुई आर्थिक शक्ति है भारत – सुषमा स्वराज	13
भीमराव आंबेडकर और उनके शिक्षा सम्बंधी विचार डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री	15
शक्तिशाली भारत के निर्माण में युवा शक्ति ही अंतिम समाधान – सुनील आंबेकर	18
आगरा में प्रदर्शनकारियों को बनाया लुटेरा, भेजा जेल	19
शिक्षा और राजनीति के पुरोधाओं को भारत रत्न – दीपक बरनवाल	21
गुमनामी में जीते गर्दिश के सितारे –दीपक कुमार	22
जल है तो हम है – प्रकाश जावड़ेकर	23
कोहिमा विजय दिवस (8 अप्रैल) पर विशेष – आशुतोष	24
आप (AAP) की जीत के मायने... – श्रीरंग कुलकर्णी	27
डीयू में प्रदर्शनकारी छात्रों पर लाठीचार्ज	30

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

महात्मा गांधी ने भारत में आंदोलन का एक व्याकरण गढ़ा है। सत्याग्रह, धरना, प्रदर्शन आदि इसके चरण हैं। इसका प्रभाव इतना गहरा है कि धुर दक्षिण से धुर वाम तक अपनी भाषा को व्याकरण के इसी खांचे में कसने के लिये विवश रहे हैं। देश के छात्र आन्दोलन भी इसी मार्ग को अपनाते रहे। अभाविप भी इसमें अपवाद नहीं है।

लगभग दो दशक पहले कर्मयोगी स्व. नानाजी देशमुख परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन में पधारे थे। उपस्थित कार्यकर्ता प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए उन्होंने एक अलग विचार प्रस्तुत किया। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि अपने गांव जाते समय यदि मार्ग में नदी आ गयी तो स्वाभाविक है कि हमें नाव से पार करनी होगी। लेकिन नदी पार करने के बाद हमें यात्रा का दूसरा साधन अपनाना होगा। आगे सड़क पर भी हम नाव से ही जाने की चेष्टा करेंगे तो समय और श्रम तो व्यय होगा किन्तु यात्रा पूरी नहीं होगी। धरना–प्रदर्शन अंग्रेजों के विरुद्ध हमने किये क्योंकि तब यह आवश्यक था। स्वतंत्रता के तट पर पहुंच कर भी उन्हीं साधनों के भरोसे आगे बढ़ने की नीति दूर तक साथ नहीं देगी। हमें विकास और पुनर्निर्माण की दिशा में बढ़ना है तो उसके अनुकूल ही साधन खोजने होंगे।

परिषद के तत्कालीन कार्यकर्ताओं ने इस संदेश को हृदयंगम किया। संघर्ष का मार्ग छोड़ा नहीं बल्कि संघर्ष के साथ–साथ विकासोन्मुख नवरचना की दिशा में देश के छात्र–युवाओं के समय और श्रम के नियोजन की रूप–रेखा बननी प्रारंभ हुई। इसके व्यावहारिक प्रयोग प्रारंभ हुए और आज देश में अनेक स्थानों पर विद्यार्थियों द्वारा प्रौद्योगिकी का उपयोग कर नयी–नयी परिकल्पनाओं पर आधारित उपकरणों के निर्माण, उनके प्रदर्शन और प्रतियोगिता के आयोजन की एक श्रंखला ही विकसित हो गयी है। महाराष्ट्र में प्रारंभ होने वाला पहला उपक्रम डिपेक्स गत वर्ष अपने आयोजन के 25 सफल वर्ष पूरे कर चुका है। इस अंक में देश के विभिन्न भागों में आपके समक्ष ऐसे ही अनेक आयोजनों की जानकारी मिलेगी।

महामना मदनमोहन मालवीय तथा श्री अटल बिहारी वाजपेयी को भारतरत्न से सम्मानित किया गया है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना कर पराधीन भारत में शिक्षा और राष्ट्रवादी चेतना के केन्द्र का सृजन महामना ने किया। यहां से निकलने वाले युवाओं ने जहां स्वतंत्रता के लिये संघर्ष किया वहीं स्वतंत्रता के पश्चात के भारत के निर्माण में भी उनकी महत्वूर्ण भूमिका है। गंगा की पवित्रता और अविरलता के लिये आंदोलन चलाने वाले स्व. मालवीयजी ने समाज को साथ लेकर अंग्रेजों को झुकने के लिये विवश किया। भारतरत्न से उनका सम्मान वस्तुतः उनके कृतकार्यों को देश का कृतज्ञता ज्ञापन है।

भारतीय राजनीति के शिखरपुरुष पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को भारतरत्न भी इसी श्रंखला की कड़ी है। राष्ट्रीय राजनीति में उनका योगदान अविस्मरणीय है। विशेष रूप से जिस राष्ट्रीय विचार को दशकों तक पीछे धकेलने के राजनैतिक प्रयास होते रहे, उसे ही सारे अवरोधों को किनारे कर मुख्य भूमिका में लाने का भगीरथ कार्य उनके नेतृत्व में हुआ।

विद्यार्थी परिषद जैसे छात्र संगठन के लिये यह विशेष प्रसन्नता का अवसर है क्योंकि महामना का सम्मान जहां शिक्षा क्षेत्र में राष्ट्रीय विचारों की स्थापना, जिसके लिये अभाविप सदैव प्रयत्नशील है, की पुष्टि है, वहीं परिषद् के प्रारंभिक दिनों में ही चलाये गये "भारतीयकरण उद्योग" के उत्तर प्रदेश के संयोजक के रूप में छात्र–नेता अटल बिहारी वाजपेयी का अभाविप के जन्मकाल से ही संबंध है।

अभाविप के शिल्पकार स्व. यशवंतराव केलकर के साथ संगठन गढ़ने के काम में अपनी ऊर्जा लगाने वाली पीढ़ी के वयोवृद्ध सदस्य श्री नारायण भाई भंडारी (नाना) अपने बीच नहीं रहे। 90 वर्ष की आयु में भी जीवन को पूरी प्रफुल्लता से जीने वाले नाना ने स्वस्थ मन–मस्तिष्क के साथ दिव्य यात्रा के लिये प्रस्थान किया। जीवन का भारतीय दर्शन के अनुकूल समग्र चिंतन और आध्यात्मिक अभिनिवेश ही व्यक्ति को चेतना के इस उच्च स्तर तक पहुंचाता है। नारायण भाई का जीवन ही नहीं बल्कि उनकी विदाई भी परिषद कार्यकर्ताओं के लिये प्रेरणा का स्रोत है। छात्रशक्ति की ओर से अपने प्रिय नाना को हार्दिक श्रद्धांजलि।

कुछ समय के विराम के पश्चात् छात्रशक्ति का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। अभाविप जैसे छात्र संगठनों की कार्ययोजना में इस प्रकार के विराम भी आते रहे हैं। लेकिन हर बार नयी ऊर्जा के साथ पुनः कार्य में जुट जाने की प्रवृत्ति ने ही आगे बढ़ते रहने का सम्बल दिया है। यह विराम भी छात्रशक्ति को पहले से बेहतर प्रस्तुति का संतोष आपको प्रदान करेगा ऐसी आशा है।

बदहाल शिक्षा व्यवस्था को लेकर पटना में विधान सभा घेराव

पुलिस ने किया लाठीचार्ज, 75 से अधिक कार्यकर्ता घायल

प्रमुख मांगे

- विश्वविद्यालयों में 9 हजार से अधिक रिक्त पदों की भरा जाये।
- महाविद्यालयों में आधारभूत संरचना को सुदृढ़ किया जाये।
- प्रत्येक जिला मुख्यालय पर कम से कम एक महिला कॉलेज हो।
- राज्य सरकार विश्वविद्यालयों का संपूर्ण बजट पारित करें और एकमुश्त राशि आवंटित करें।
- Choice Based Credit System और Semester System आवश्यक आधारभूत संरचना के विकास के बिना लागू नहीं किया जाये।
- शिक्षा, कृषि, वाणिकी, बागवानी, कम्प्यूटर जैसे विषयों को त्रिवर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम में शामिल किया जाये।
- शिक्षा व्यवस्था को भ्रष्टाचार मुक्त बनाया जाये।
- नैतिक मूल्यों व पर्यावरण की पढ़ाई को स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल किया जाये।
- विश्वविद्यालय के परीक्षा विभागों में व्याप्त क्रय–विक्रय घोटाले, अंक–पत्र घोटाले आदि की अलग से जांच करायी जाये।
- छात्र संघ का चुनाव प्रत्यक्ष प्रणाली से लिंगदोह कमिटी की अनुशंसा के अनुरूप तुरंत कराया जाये।

पटरी से उतर चुकी शिक्षा व्यवस्था के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने विधानसभा घेराव की कोशिश की। विधानसभा घेराव के चलते 26 मार्च को सुबह से ही बड़ी संख्या में प्रदेशभर से कार्यकर्ता पटना पहुंचने लगे। दोपहर तक हजारों की संख्या में कार्यकर्ता जुट गए। राज्य भर से आए हजारों छात्रों का जुलूस अपराह्न साढ़े 12 बजे गांधी मैदान से निकला। जुलूस रेडियो स्टेशन, डाक बंगला चौराहा, स्टेशन रोड, जीपीओ होते हुए आर ब्लॉक पहुंचा। यहां पहुंचने के बाद पुलिस ने आर ब्लॉक पर उन्हें रोका। हजारों कार्यकर्ताओं के आगे चंद पुलिसकर्मी कमजोर पड़ गए और पीछे हट गए। एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने आरब्लॉक गेट पार किया।

इसी बीच सूचना पाकर एसएसपी मौके पर पहुंचे और प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज का आदेश दिया। प्रदर्शन कर रहे छात्रों को तितर–बितर करने के लिए लाठीचार्ज के साथ ही रबर बुलेट से कई राउंड फायरिंग भी की गई।

पुलिस ने छात्रों पर जमकर लाठियां बरसायीं। भाग रहे छात्रों को पुलिस ने खदेड़–खदेड़ कर पीटा। कई छात्र भागने के क्रम में नाले में भी गिर गए। इसके बावजूद छात्रों पर पुलिस की लाठियां बरसती रही। छात्रों की संख्या इतनी थी कि पुलिस को आंसू गैस और पानी की बौछार करनी पड़ी। फिर भी सौ छात्रों का जत्था विधानमंडल के मुख्य द्वार तक पहुंच गया। पूरे घटनाक्रम में एक सौ से अधिक छात्रों को गिरफ्तार किया गया और 75 से अधिक छात्र घायल हुए।

परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य पप्पू वर्मा ने कहा कि पुलिस ने बर्बर तरीके से छात्रों को पीटने का काम किया। 75 से अधिक छात्र घायल हुए हैं।

12 छात्रों की स्थिति गंभीर बनी हुई है। उनका इलाज पीएमसीएच में चल रहा है। सौ से ज्यादा छात्रों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने राज्य सरकार से इस घटना में शामिल दोषी पुलिस पदाधिकारियों को बर्खास्त करने की मांग की है।

संगठन का आरोप है कि वर्तमान नीतीश सरकार की वजह से बिहार की प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक आइसीयू में पहुंच चुकी है। शिक्षा के सभी क्षेत्रों में लूट मची हुई है। संगठन का आरोप है कि आधारभूत ढांचे के लिए मौजूद बजट में काफी कम पैसे दिए गए हैं। इस बदहाली की परिस्थिति के कारण कार्यकर्ताओं को सड़क पर उतरने को मजबूर होना पड़ा।

बिहार बंद सफल, 467 हिरासत में

पुलिस की बर्बरता के विरोध में अभाविप के आह्वान पर 30 मार्च को बिहार बंद का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रदेश में कई स्थानों पर रेल एवं सड़क यातायात बाधित हुई। बंद के मद्देनजर राजधानी पटना समेत सभी जिलों में सुरक्षा के व्यापक प्रबंध किय गये थे। इस सफल बंद के दौरान पूरे प्रदेश में 467 कार्यकर्ताओं को पुलिस ने हिरासत में लिया।

विधानमंडल में गूंजा एबीवीपी पर लाठीचार्ज का मामला

विधानमंडल के दोनों सदनों में गुरुवार को विपक्षी दल भाजपा के सदस्यों ने शिक्षा व्यवस्था में अराजकता व्याप्त रहने का आरोप लगाते हुए जोरदार हंगामा किया। विधान परिषद में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं पर लाठीचार्ज का मामला उठा। विधानसभा में शून्यकाल शुरू होते ही नेता प्रतिपक्ष नंदकिशोर यादव ने शिक्षा की स्थिति पर सरकार का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया। छात्र संघ चुनाव कराने की भी मांग की। जोरदार हंगामे के बीच ही शून्यकाल की कार्यवाही पूरी की गई।

नंदकिशोर यादव ने तत्पश्चात अपने कक्ष में संवाददाता सम्मेलन कर शिक्षा की स्थिति पर नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन एनयूईपीए की रिपोर्ट जारी करते हुए कहा कि ये आंकड़े चिंताजनक हैं। पूरे विश्व को ज्ञान देने वाले बिहार की स्थिति आज यह है कि यहां की डिग्री की मान्यता पर भी प्रश्न खड़ा किया जाता है। उन्होंने कहा कि छात्रों ने शिक्षा की अराजक स्थिति के खिलाफ आंदोलन शुरू किया है। भाजपा उनके आंदोलन का समर्थन करती है।

भोपाल में तीन दिवसीय 'साविष्कार' (i-FAST 2015) का आयोजन

'प्रतिकूल मार्ग पर चलकर नया काम करने वाला ही युवा' - श्रीहरि बोरिकर

छात्रों को संबोधित करते अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री श्री श्रीहरि बोरिकर (बाएं) व मध्य प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री श्री उमाशंकर गुप्ता

पढ़ाई के साथ–साथ अपने समाज और देश के प्रति योगदान करने की सोच प्रत्येक विद्यार्थी को रखनी चाहिए। किसी भी देश की ताकत उसका राष्ट्रभक्त युवा होता है। कहा भी जाता है कि छात्र शक्ति ही राष्ट्र शक्ति है। यह विचार अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्रीहरि बोरिकर ने व्यक्त किए। वह 'साविष्कार' (i FAST-2015) आयोजन में बतौर मुख्य वक्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मध्य प्रदेश के विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह ने की, मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश के उच्च एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री उमाशंकर गुप्ता मौजूद थे। उद्घाटन समारोह का आयोजन मौलाना आजाद नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MANIT) के विक्रम साराभाई हॉल में किया गया। इस मौके पर MANIT डायरेक्टर श्री अप्पू कुट्टन, MANIT अध्यक्ष डॉ. गीता बाली, छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के महानिदेशक श्री मुकुन्द हम्बर्डे, मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के महानिदेशक श्री प्रमोद वर्मा, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रदेश आईटी प्रमुख श्री अंकित गर्ग, प्रांतीय मंत्री श्री नीतेश शर्मा और श्री रोहन रॉय भी मौजूद थे। अतिथियों ने फीता काटकर विभिन्न प्रदर्शनियों का उद्घाटन भी किया।

प्रौद्योगिकी परिषद, विद्यार्थी कल्याण न्यास और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'साविष्कार' में परिषद राष्ट्रीय महामंत्री श्री बोरिकर ने कहा कि समाज और आम आदमी को ध्यान में रखकर आविष्कार करने चाहिए। आविष्कार सकारात्मक हो, समाज का कल्याण करने वाला हो। इसी को ध्यान में रखकर इस आयोजन का नाम आविष्कार नहीं साविष्कार रखा गया है। उन्होंने युवाओं को परिभाषित करते हुए कहा कि असंभव को भी संभव करने वाले और प्रतिकूल रास्ते पर चलकर नया काम करने वाले ही असली युवा होते हैं। देश के कुछ क्षेत्रों में युवाओं के हाथ में हथियार थमा दिए गए हैं। ये युवा भी देश की

ताकत हैं। लेकिन, गलत दिशा मिलने से ये विध्वंस में लगे हैं। इन्हें भी सही रास्ते पर लाने के प्रयास होने चाहिए।

विज्ञान में भी श्रेष्ठ था भारत – उमाशंकर गुप्ता

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री उमाशंकर गुप्ता ने कहा कि भारत प्रत्येक क्षेत्र में कभी न कभी शीर्ष पर रहा है। विज्ञान और तकनीक में भी भारत कभी श्रेष्ठ था, यह बात आज दुनिया मान रही है।

12 सत्रों में विशेषज्ञों ने दिखाई राह

साविष्कार के दूसरे दिन 12 सत्रों में विभिन्न विषय विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को बताया कि तकनीक के क्षेत्र में कैसे न केवल खुद का करियर बनाएं बल्कि अपने देश को भी मजबूत करें। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण के सूत्र भी विशेषज्ञों ने दिए। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बृज किशोर कुठियाला ने कहा कि किसी भी प्रकार की तकनीक तैयार करने के लिए सकारात्मक मन की आवश्यकता होती है। यदि आपका संकल्प पवित्र है तो प्रकृति भी उसे पूर्ण करने में आपकी मदद करती है। इसके साथ ही एसटीपीआई के श्री ओमकार राय, डीआईसीसीआई के अध्यक्ष श्री मिलिन्द काम्बले, ओरिएंटल ग्रुप के अध्यक्ष श्री प्रवीण ठकराल, एनपीएल के वैज्ञानिक सचिव डॉ. आलोक मुखर्जी, सीआई के अध्यक्ष डॉ. उमेश शर्मा, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की सदस्य प्रो. कुसुमलता केडिया, सैफिया टेक्नोलॉजी के एमडी श्री धनंजय पाण्डेय, आरसीआई के डायरेक्टर डॉ. जी. सतीश, ट्रिन्टी कॉलेज के अध्यक्ष श्री शोभित जैन, आईईएस ग्रुप के अध्यक्ष श्री बीएस यादव सहित अन्य विशेषज्ञ व विद्वानों ने विभिन्न सत्रों में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

बैम्बू हाउसिंग बेहतर विकल्प रायपुर के एमएम कॉलेज के छात्रों ने बैम्बू हाउसिंग को स्टील एवं कांक्रीट से बने घरों का बेहतर विकल्प बताया है। 50

वर्षों तक बैम्बू हाउस इस्तेमाल में लाए जा सकते हैं। पर्यावरण को भी इससे किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचेगा। खास बात यह है कि बांस से बने घरों की छतों पर खेती भी की जा सकती है।

प्लास्टिक से बनाई मजबूत सड़क रायपुर के आईटीएम कॉलेज के विद्यार्थियों ने ग्रामीण सड़क विकास के मामले में एक सार्थक कदम उठाया है। शुभम जायसवाल, चिराग आथा, श्वेता सिंह और उमेश आडवानी ने बताया कि उनके आसपास के गांव में सड़कें तो बनती थीं लेकिन बाढ़ और अन्य कारणों से ज्यादा दिन टिक नहीं पाती थीं। ऐसे में इन छात्रों ने पहल कर बिना किसी सरकारी मदद के स्थानीय स्रोतों और कूड़े–कचरे, विशेषकर प्लास्टिक का उपयोग कर टिकाऊ सड़क का निर्माण किया है, जो अब बाढ़ में बहती नहीं। इस सड़क की लागत भी कम आई।

हायरसेकेंड्री के छात्र ने बनाया फाइटर प्लेन ग्वालियर के अनूप सिंह राठौर एक फाइटर प्लेन का मॉडल लेकर आए। वे 12वीं के छात्र हैं। उनके फाइटर प्लेन की खासियत है कि यह 30 किमी की रेंज में आने वाले दुश्मनों को सेंसर कर लेगा और जमीन से 70–80 फीट ऊपर जाने पर साउण्ड लैस हो जाएगा। यह 80–90 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से चलेगा और जरूरत पड़ने पर इसकी रफ्तार बढ़ाई भी जा सकती है। यह युद्ध करने के साथ–साथ विपत्ति की सारी गतिविधियों पर निगरानी रखेगा।

सविष्कार (i-Fast) 2015 कार्यक्रम का मीडिया कवरेज

सबसे बड़ी बात यह है कि यह फाइटर प्लेन महज 50 हजार रुपये में तैयार हो जाएगा। इसे रन–वे की आवश्यकता भी नहीं। अनूप किसान परिवार से है। सात साल की कठिन मेहनत के बाद उन्होंने अपना मॉडल बनाया है।

अब मोबाइल से सिंचाई करेंगे किसान

ओरिएंटल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी के छात्र अनुराग, ऋषि, प्रियांशु, ख्याती और काव्या ने ऐसा एण्ड्रॉयड एप्लीकेशन तैयार किया है, जिसकी मदद से किसान घर बैठे ही खेत में पानी दे सकेंगे। किसान को मोटर चालू करने के लिए खेत तक जाने की जरूरत नहीं होगी। वह इस एप का इस्तेमाल करते हुए घर बैठे ही मोटर चालू कर सकेगा। छात्रों ने कहा कि वे भविष्य में किसान की मदद करने वाली और भी एप्लीकेशन डेवलप करेंगे।

सविष्कार (i Fast–2015) का समापन

देश के विकास की पहचान, वहां के विकसित विज्ञान से होती है। पूर्व के समय में देश के विकास की पहचान कला और संस्कृति से होती थी। सविष्कार में शामिल युवा टेक्नोक्रेट और वैज्ञानिक निश्चित ही देश का विकास करेंगे। यह विचार मध्यप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष सीताशरण शर्मा ने सविष्कार (आईफास्ट–2015) के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए। समारोह में मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने वीडियो के द्वारा संदेश दिया। समापन समारोह में विधानसभा अध्यक्ष श्री शर्मा ने कहा कि युवा वैज्ञानिकों को आगे बढ़ाने के लिए प्रदेश और केन्द्र सरकार प्रयासरत हैं। युवाओं के प्रोजेक्ट और आइडिया को धरातल पर लाने में पहले बहुत–सी बाधाएं थीं। प्रदेश और केन्द्र सरकार इन्हीं बाधाओं को हटाने का काम कर रही है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री सुनील आम्बेकर ने कहा कि सविष्कार देखने में आया कि युवा टेक्नोक्रेट ने समाज की आम समस्याओं को दूर करने वाले प्रोजेक्ट प्रदर्शित किए। युवाओं की यह सोच सराहनीय है। आम आदमी के सपनों को तकनीक में जगह मिले तो देश में बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है। उन्होंने कहा कि मौलिक आइडिया से ही सफलता मिलती है। अमरीका, चीन, जापान और रूस जैसे देशों की नकल करके भारत विकास नहीं कर सकता। श्री आम्बेकर ने कहा कि विचारधाराओं के खूनी संघर्ष से दुनिया को भारत ही बचा सकता है। दुनिया में शांति की स्थापना के लिए भारत का ताकतवर होना बहुत जरूरी है। इस मौके पर सविष्कार की स्मारिका का भी विमोचन किया गया। मैनिट के डायरेक्टर श्री अप्पू कुट्टन, मैपकॉस्ट के डायरेक्टर श्री प्रमोद वर्मा और अभाविप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शशिरंजन अकेला भी मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन मैनिट के सहायक प्राध्यापक श्री मनोज आर्या ने किया। पुरस्कारों की घोषणा प्रो. प्रज्ञेश अग्रवाल ने की।

सविष्कार में प्रदर्शित ऊर्जारिटर, सोलर शिप एज वाटर ड्रोन, सोलर पेनल एनर्जी मैनेजमेंट और एनर्जी एफीसिएंट सोलर सिस्टम सहित अन्य प्रोजेक्ट को 11 अलग–अलग थीम में प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके साथ ही टेक्निकल पेपर को भी पुरस्कार दिए गए।

हमारे प्रेरणा स्रोत स्वर्गीय नारायणराव भंडारी

✍ अरुण भाई दार्दी

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के वरिष्ठ कार्यकर्ता मा. नारायण राव भंडारी 90 वर्ष की आयु में 9 मार्च 2015 को प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में ब्रह्मतत्व में विलीन हुए। जाते समय मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ थे। उन्होंने सबको पास बुलाकर कहा– 'चिंता मत करो, टेंशन मत लो, मैं मोक्षमार्ग पर जा रहा हूँ। अपने नित्य प्रवास पर जा रहा हूँ।' नारायण दादा, नाना जैसे नामों से प्रचलित नारायण राव अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती शशिकला, पुत्रियां सुनंदा, स्मिता, पुत्र उत्कंठ और पुत्रवधु ज्योति को छोड़ कर गए। शशिकला वहिनी का सहधर्मचारिणी के रूप में अत्यंत मूल्यवान योगदान रहा। चाहे वह परिषद का कार्य हो, सुख–दुःख में उन्होंने हँसते–हँसते सहयोग किया।

स्व.श्री नारायणराव भंडारी
(1926–2015)

गुजरात के राज्यपाल और नाना के एक समय के सह कार्यकर्ता मा. ओम प्रकाश कोहली सहित गुजरात के अनेक कार्यकर्ता नाना की अंतिम यात्रा और बाद में श्रद्धांजलि कार्यक्रम में उपस्थित थे। नाना का जीवन विद्यार्थी परिषद के गौरवशाली इतिहास का एक सुवर्ण प्रकरण है। वे बाल्यकाल से ही संघ के स्वयंसेवक बने। आगे चलकर प्रचारक के रूप में काम किया। संघ के दायित्व के कारण वैवाहिक जीवन और कॉलेज का अभ्यास देर से शुरू हुआ। आगे चलकर गणित विषय के प्राध्यापक बने। वैदिक गणित उनके रूचि का विषय रहा।

स्व. यशवंत राव केलकर को जब विद्यार्थी परिषद का दायित्व मिला तबसे उनका गुजरात प्रवास शुरू हुआ। गुजरात में उनके साथ नाना को काम करने का दायित्व मिला। गुजरात में 1949 से काम तो होता था लेकिन व्यवस्थित रूप से 1964 से प्रारंभ हुआ। तबसे नाना ने कभी मुड़ कर पीछे नहीं देखा। एक कमरे का उनका छोटा सा घर परिषद का भी वर्षों तक घर रहा। भाभी और बच्चे हमेशा के लिए सदस्य बन गए। शनिवार दोपहर को नाना अपना थैला लेकर प्रवास पर निकल पड़ते। रविवार रात को वापस आते, नहीं तो सोमवार सुबह सीधे कॉलेज। वर्षों तक यह क्रम चलता रहा।

नाना के व्यक्तित्व के लक्षण और काम करने की अनोखी शैली का अभ्यास करने जैसा है। बिलकुल अनौपचारिक, सरल, सहज–संवाद और स्मित से सुशोभित उनका चेहरा। किसी के भी हृदय में वह अपना स्थान बना लेते थे। वे अपने आपको किसी से भी सरलता से जोड़ सकते थे।

एक बार एक पूर्णकालिक वर्ग में आत्मनिवेदन का सत्र चल रहा था। गुजरात के इस वर्ग में भानु माली नाम का एक कार्यकर्ता था। वो कहने लगा, नाना ने एक कार्यक्रम में मेरा परिचय मांगा। मैंने कहा–मेरा नाम भानु माली। यह सुनते ही नाना बोल पड़े "माली! तो आप फूल जैसे।" यह सुनकर वह कार्यकर्ता रोने लगा। उसको किसी ने पहली बार फूल जैसा कहा था। यह नाना की शैली थी। इसी पद्धति से उन्होंने अपने कार्यालय में गुजरात में एक विशाल और सुंदर बगीचा बनाया। उसकी महक आज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में फैल रही है। आजकल अपने वर्गों के प्रारूप देखकर वे कहते थे, "हमारे समय में इतनी कठिन बातें नहीं थी"। उनका कहने का तात्पर्य शायद यह था कि उन्होंने प्रेम, आत्मीयता, नित्य सम्पर्क, निर्दोष हँसी–मजाक के बलबूते पर काम खड़ा किया। अपने कार्य का शायद यही रहस्य है

लेकिन दुख से आज की जीवनशैली में उनका सरल तत्व हमारे लिए कठिन बन गया है।

नाना के व्यक्तित्व व्यवहार का अवलोकन करते हुए, एक और बात ध्यान में आती है। उनका संघ विचार या संघ दर्शन पर पक्का विश्वास था। उनकी प्रत्येक श्वास में केवल संघ–परिषद ही रहते थे। उन्हें कभी संघ कार्य पर एक पल के लिए भी शंका या संदेह नहीं था। उनका मानना था कि संघ–विचार और संघ कार्य अगर मजबूत है तो फिर कार्यकर्ता भी महान है। वास्तव में उनकी दृष्टि से संघकार्य से जुड़ा हुआ कोई भी कार्यकर्ता 'महान' से जरा भी कम नहीं था। प्रत्येक कार्यकर्ता का नाम बोलने से पहले वे 'हमारे' शब्द का उच्चारण करते थे। 'विचार मजबूत, कार्य मजबूत और कार्यकर्ता महान' ऐसी त्रिमूर्ति उनके व्यवहार का आधार रही। जो कार्यकर्ता, छात्र–छात्रा या प्राध्यापक नाना से मिलता वह अवश्य ही प्रेरणा, प्रोत्साहन, ऊर्जा और जीवनभर का मिशन लेकर जाता।

गुजरात में विद्यार्थी परिषद का काम व्यवस्थित रूप से 1964 से प्रारंभ हुआ। तबसे नाना ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। एक कमरे का उनका छोटा सा घर परिषद का भी वर्षों तक घर रहा। शनिवार दोपहर को नाना अपना थैला लेकर प्रवास पर निकल पड़ते। रविवार रात को वापस आते, नहीं तो सोमवार सुबह सीधे कॉलेज। वर्षों तक यह क्रम चलता रहा।

नाना के व्यक्तित्व व्यवहार का अवलोकन करते हुए, एक और बात ध्यान में आती है। उनका संघ विचार या संघ दर्शन पर पक्का विश्वास था। उनकी प्रत्येक श्वास में केवल संघ–परिषद ही रहते थे। उन्हें कभी संघ कार्य पर एक पल के लिए भी शंका या संदेह नहीं था।

नारायण राव ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का दायित्व भी निभाया था। आपातकाल के समय मीसा (MISA) के तहत जेल में भी गये। भाभी ने बड़ा संघर्ष किया, घर का मोर्चा सँभाला, जेल से छूटने वाले नाना सबसे आखिर के कार्यकर्ता थे। लेकिन वह जब जेल की बात करते थे तो लगता था, जेल में उनका कार्यकाल कोई उत्सव जैसा रहा हो। काम करते समय उनका प्रिय वाक्य होता था "students and teachers working together, coming together, thinking together, working together.

नाना अब नहीं हैं लेकिन उनके विचार हमारे साथ है। हमारा तत्वज्ञान कहता है कि एक शरीर जो विचार छोड़ कर जाता है, उसके पश्चात् यह विचार और भी मजबूत और व्यापक होता है। नाना अपने पीछे संस्कार, हजारों कार्यकर्ता संघ समर्पित कर विरासत में छोड़ गये हैं। उनके अंतिम दिनों में दो अच्छी घटनाएं हुई जिनका उनको तो संतोष था ही, सब कार्यकर्ताओं को भी था। गुजरात अभाविप की 50 वर्ष (1964–2014) के उपलक्ष्य में पूर्व और वर्तमान कार्यकताओं ने नाना का सम्मान किया। उस मौके पर गुजरात के राज्यपाल मा. ओम प्रकाश कोहली, गुजरात की मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबेन पटेल, मा. दत्तात्रेय होसबाले, श्री सुनील आंबेकर, श्री श्रीहरि बोरिकर मौजूद थे। यह कार्यक्रम भावपूर्ण और यादगार रहा। नाना को सभी कार्यकताओं से मिलने का ही आनंद था। बाद में 50 वर्ष के उपलक्ष्य में अभाविप गुजरात के इतिहास की पुस्तिका का प्रकाशन हुआ जिसकी कॉपी नाना ने हॉस्पिटल में पढ़ी थी और संतुष्ट थे।

नाना को श्रद्धांजली देना उसका एक ही अर्थ हो सकता है – उनके विचारों को, उनके कार्य को, उनकी जीवनशैली को आगे बढ़ाना। जब भी कोई संघ अकारण जाएगा, जब कोई दूसरे कार्यकर्ता के घर अकारण जाएगा, जब कोई दूसरे कार्यकर्ता की प्रशंसा करेगा... तब वह नारायण भाई को हमारे बीच पाएगा। उनकी पुण्यस्मृति हमारा बल बने यही हमारी प्रार्थना।

'विश्व में तेजी से बढ़ती हुई आर्थिक शक्ति है भारत' - सुषमा स्वराज

वोसी (WOSY) का में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय युवा सम्मेलन दिल्ली में संपन्न

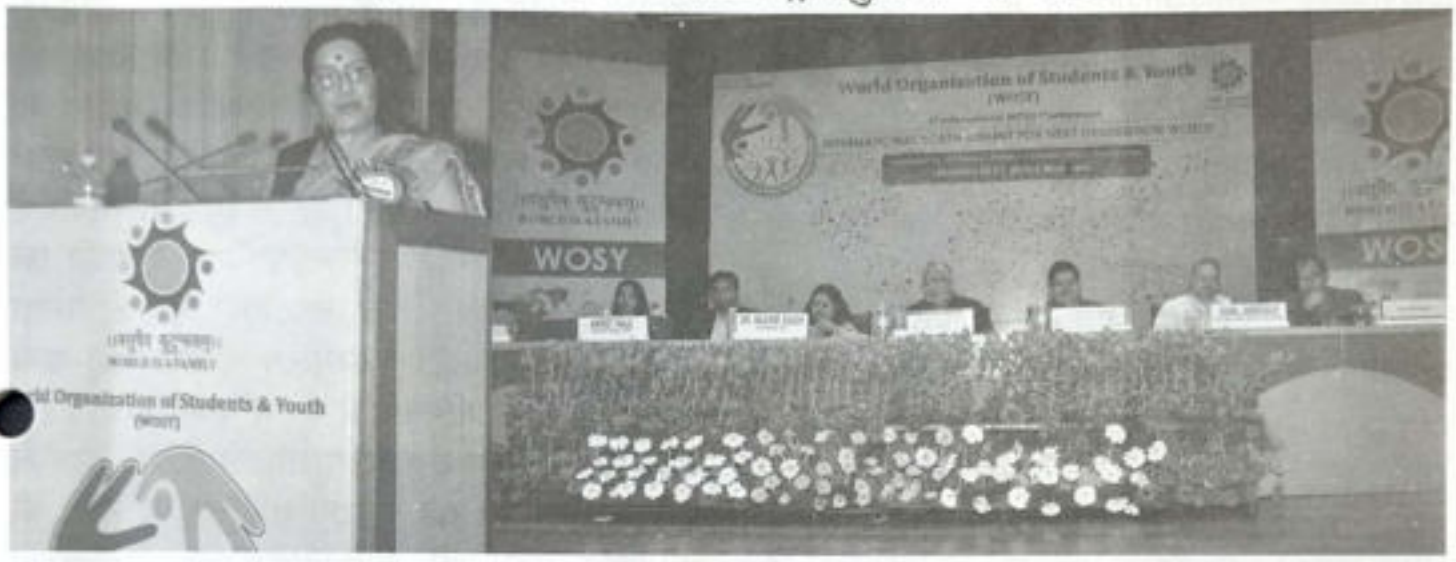

उद्घाटन कार्यक्रम में प्रतिनिधियों को संबोधित करतीं विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज (बाए)। समापन कार्यक्रम में ICCR के अध्यक्ष श्री सतीश मेहता, अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. नागेश ठाकुर तथा अन्य मान्यवर

विश्व विद्यार्थी युवा संघ (वोसी) और विदेश मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में 20–21 फरवरी 2015 को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केन्द्र, पूसा में आयोजित हुआ था। 'दुनिया की अगली पीढ़ी के लिए अंतरराष्ट्रीय युवा शिखर सम्मेलन' के नाम से यह कार्यक्रम हुआ। इस सम्मेलन में 64 देशों से आये 390 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सम्मेलन का उद्घाटन विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने किया जबकि स्वागत भाषण वोसी के अंतराष्ट्रीय सचिव श्री संजीव निंगोम्बम ने दिया। वोसी का संक्षिप्त परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि वोसी वैश्विक विकास में शांति और सामंजस्य के लिए काम करता है। वोसी सलाहकार परिषद के सदस्य श्री सुनील आंबेकर ने कहा, वोसी विविधता और एकजुटता का एक साथ स्वागत करता है। उन्होंने कहा, वोसी भारत और भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शांति और विकास में सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

सम्मेलन के उद्घाटन मौके पर श्रीमती स्वराज ने दर्शक दीर्घा में बैठे युवाओं से कहा कि भारत का भविष्य उज्ज्वल है, देश नयी ऊँचाई पर पहुंचेगा, उसकी पटकथा लिखी जा रही है। उन्होंने कहा कि विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष भी मान रहा है कि भारत देश विश्व में तेजी से बढ़ती हुई आर्थिक शक्ति है।

उन्होंने भारतीय विदेश नीति के चार प्रमुख बिन्दुओं पर प्रमुख रूप से चर्चा की। पहला एक सौ स्मार्ट सिटी बनाने की योजना में अंतरराष्ट्रीय रणनीतिक साझेदार ढूंढना ताकि गरीबी और अशिक्षा जैसी समस्याओं से लड़ा जा सके, दूसरा स्थायी रूप से शांति के लिए पड़ोसियों से बेहतर संबंध बनाना, तीसरा भारतीय संस्कृति और इसकी विरासत का वैश्विक स्तर पर प्रचार–प्रसार और चौथा नये विचार, नई पहल और युवा विदेश नीति का भारत स्वागत करता है।

उन्होंने कहा कि यहां बैठे सभी युवा भारत के राजदूत हैं। उन्हें वैश्विक स्तर पर देश के विकास में

महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। इस मौके पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के शोधार्थियों की पुस्तक 'द कलेक्शन ऑफ एसेज ऑन इंटरनेशनल रिलेशन्सः ए वोसी इनीसिएटिव' का लोकार्पण हुआ।

सम्मेलन के पहले दिन 'विकास और शांति' विषय का सत्र था। सत्र की अध्यक्षता करते हुए पूर्व राजदूत स्कंद तायल ने कहा कि विश्व में विभिन्न प्रकार की जाति, नस्ल और रंग के लोग हैं। हमें इस विविधता को स्वीकार करते हुए एक–दूसरे के समीप आना चाहिए जिम्मेदारी के साथ। विदेश मंत्रालय की अधिकारी सुजाता मेहता ने वैश्विक स्तर के संगठनों और सरकारों के बीच सामंजस्य बनाने की बात कही ताकि एक–दूसरे के बीच की खाई को पाटा जा सके। रोजमर्रा की चुनौतियों का सामना करने के लिए यह बहुत जरूरी है। विदेश मंत्रालय की अधिकारी नवतेज सरना का कहना था कि शांति, युद्ध की अनुपस्थिति मात्र नहीं है, इससे आगे की चीज है। शांति की स्थापना के लिए अच्छी सरकार, सहभागिता और साझेदारी की जरूरत होती है।

सम्मेलन के दूसरे सत्र में वैश्विक स्तर की समस्याओं मसलन लिंग भेद, नस्ल भेद, सुरक्षा, युद्ध, अपराध, विकसित और विकासशील देशों के बीच बढ़ती दूरिया आदि पर सामूहिक रूप से विचार विमर्श हुआ। सम्मेलन के दूसरे दिन सभी प्रतिनिधियों को तीन समूहों में बांटा गया– अफ्रीकी संघ क्षेत्रीय युवा शिखर सम्मेलन, पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीकी सम्मेलन (WANA) और दक्षेस युवा शिखर सम्मेलन।

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के 'उत्तरदायी और प्रभावशील व्यवसाय' सत्र की अध्यक्षता वोसी की अध्यक्ष डा. रश्मी सिंह ने की। इसमें तकनीक का नौकरी पर प्रभाव और भविष्य के जीवन शैली पर विचार विमर्श हुआ। ऊर्जा का आकलन और तकनीक की कार्य क्षमता का संसाधन पर प्रभाव को लेकर चिंता व्यक्त की गई। तकनीक बेहतर सुविधा तो प्रदान कर रहा है लेकिन उसका दूसरा पहलू यह है कि रोजगार के अवसर को भी कम कर रहा है। सम्मेलन के आखिरी सत्र में भारतीय सांस्कृतिक अनुसंधान परिषद (ICCR) के निदेशक श्री सतीश मेहता बतौर मुख्य अतिथि मौजूद थे। उन्होंने वोसी के क्रियाकलापों की प्रशंसा की। इस मौके पर उन्होंने वादा किया कि भविष्य में विदेशी छात्रों के लिए फेलोशिप की संख्या बढ़ाएंगे। मौके पर मौजूद अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. नागेश ठाकुर ने कहा कि भारत देश महान है और उसकी सभ्यता बेजोड़ है। विश्व में शांति की स्थापना के लिए भारत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्होंने इस सम्मेलन में आने वाले सभी देश–विदेश के प्रतिनिधियों को धन्यवाद दिया। इस मौके पर अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आंबेकर, राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री रघुनंदन, श्री नागराज रेड्डी, श्री अनिकेत काले, श्री संजीव निंगोम्बम, डा. रश्मी सिंह आदि मौजूद थे।

प्रिय मित्रों,

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का अप्रैल 2015 का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों तथा खबरों का संकलन किया गया है। आशा है यह अंक आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा।

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव एवं विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई–मेल पर अवश्य भेजें।

"छात्रशक्ति भवन"
26, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली – 110002.
फोन : 011–23216298
ई–मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com
वेबसाइट : www.abvp.org

भीमराव आंबेडकर और उनके शिक्षा सम्बंधी विचार

✍ डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

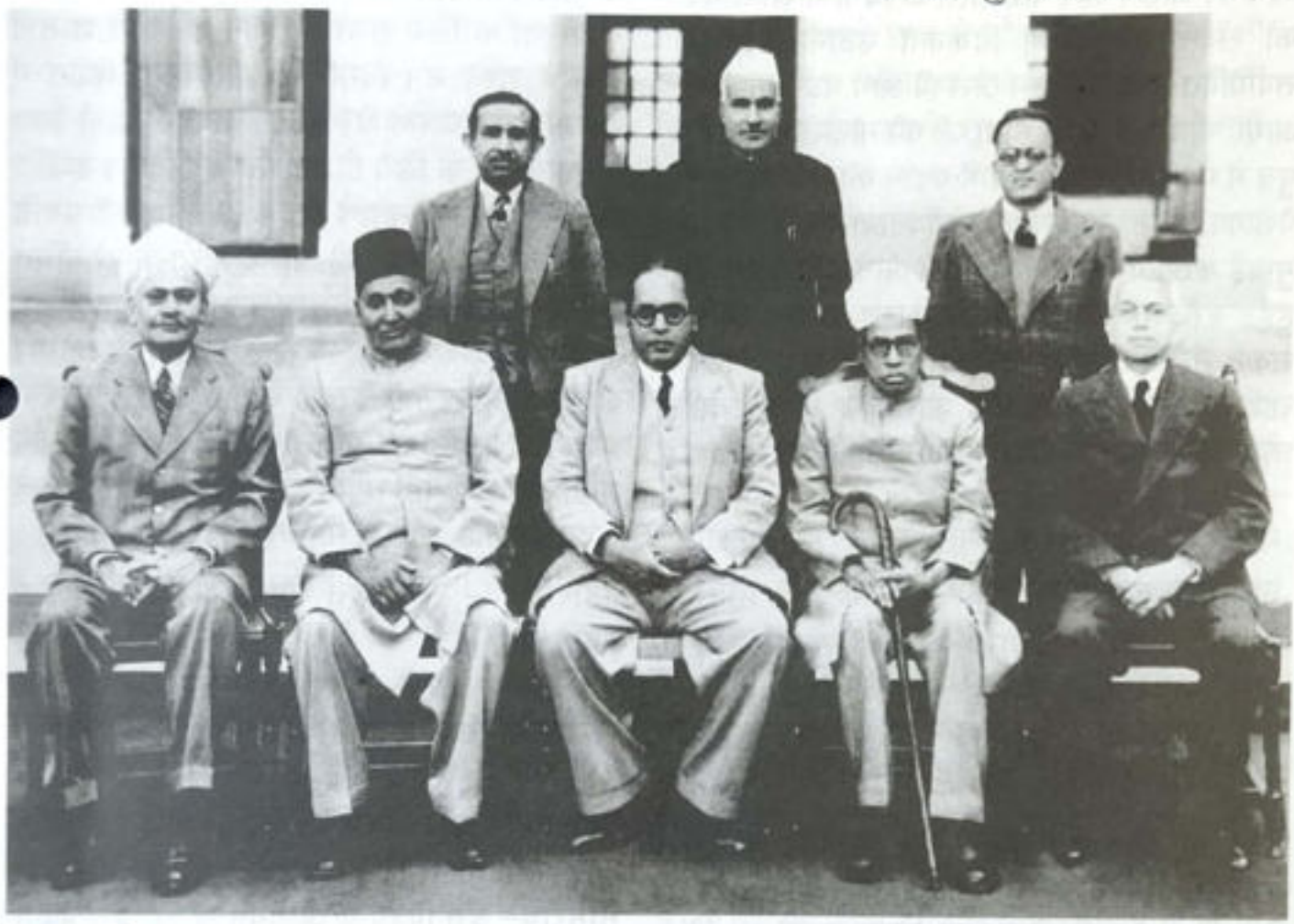

भीम राव आंबेडकर ने देश के निर्धन और वंचित समाज को प्रगति करने का जो सुनहरी सूत्र दिया उसकी पहली इकाई शिक्षा थी। वह गतिशील समाज के लिये शिक्षा को महत्व देते थे। उनका त्रि–सूत्र था– शिक्षा, संगठन और संघर्ष। वे आह्वान करते थे, शिक्षित करो, संगठित करो और संघर्ष करो। पढ़ो और पढ़ाओ। इस सूत्र का अर्थ स्पष्ट है कि संगठित होने और न्याययुक्त संघर्ष करने के लिये प्रथम शर्त शिक्षित होने की ही है।

बाबा साहेब की दृष्टि एकदम साफ है। साधन सम्पन्न समाज के बच्चों के लिये जीवन में प्रगति के अनेक रास्ते हैं। वे अपने पैतृक साधनों का प्रयोग कर नये रास्ते तलाश भी सकते हैं और पहले से ही उपलब्ध रास्तों का अपने हित के लिये सुविधा से उपयोग भी कर सकते हैं। कम से कम जीवन की भौतिक प्राप्तियों के क्षेत्र में तो यह सब हो ही सकता है । लेकिन वंचित समाज के बच्चों के लिये, साधनों के अभाव में आगे के रास्ते बन्द हो जायेंगे और वे जीवन भर दुख और वेदना का नारकीय जीवन ही ढोते रहेंगे? ऐसा नहीं है। उनके लिये एक ऐसा रास्ता खुला है, जो साधन सम्पन्न लोगों को उपलब्ध सभी रास्तों से भी ज्यादा प्रभावी और गुणकारी है। वह रास्ता है शिक्षा प्राप्त करने का। शिक्षा से भौतिक जगत में गतिशील होने की क्षमता तो प्राप्त होती ही है, बौद्धिक विकास भी होता है। ऐसा उन्होंने कहा ही नहीं बल्कि स्वयं अपने उदाहरण से करके भी दिखाया।

बाबा साहेब ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये अनेक कष्ट सहे, लेकिन उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अपने ध्येय पर अडिग रहे। पाठशाला के दिनों में जाति भेद को लेकर उनको जो दिक्कतें उठानी पड़ीं, वे सर्वविदित ही हैं। लेकिन जैसे ही आगे पढ़ने का वक्त आया, भीम राव जी के पिता जी की नौकरी छूट गई। पुत्र में पढ़ने की और पिता में पढ़ाने की लालसा और पैसे का संकट! नौकरी की संभावना तलाशने परिवार मुम्बई में आ गया। आंबेडकर की आगे की पढ़ाई वहीं हुई। बड़े शहर में जाति के कारण शायद उतना संकट नहीं था लेकिन अब तो आर्थिक संकट गहरा रहा था। लेकिन भीम राव आंबेडकर ने हठ नहीं छोड़ा। रियासती सहायता से भीमराव विदेश में उच्च शिक्षा के लिये गये और वहाँ विपरीत आर्थिक परिस्थितियों में भी अध्ययन जारी रखा। केवल इतना ही नहीं लन्दन में भी उनको चिन्ता रहती थी कि उनकी पत्नी रमाबाई भी कुछ पढ़ रही हैं या नहीं। धन सम्पदा तो आनी जानी है लेकिन शिक्षा जैसा अमोल धन अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। उन्होंने लन्दन से अपनी पत्नी को पत्र लिखा, तुम्हारी पढ़ाई चल रही है यह बहुत प्रसन्नता की बात है। पैसे की व्यवस्था करने का प्रयास कर रहा हूँ। मेरे पास पैसे नहीं हैं, इसलिये सीमित मात्रा में भोजन कर पा रहा हूँ। फिर भी आप लोगों की व्यवस्था कर पा रहा हूँ। पैसे भेजने में देर हुई और तुम्हारे पास के पैसे समाप्त हो जायें तो अपने अलंकरण बेच कर खाओ। आने के बाद फिर बनवा दूँगा। यशवन्त व मुकुन्द की पढ़ाई कैसी चल रही है ?

> बाबा साहेब का अभिमत स्पष्ट है। शिक्षा जनहितकारी होनी चाहिये। शिक्षा से प्राप्त योग्यता का उपयोग वंचित समाज के कल्याण के लिये किया जाना चाहिये न कि उसके शोषण के लिये।

आंबेडकर का फरमान साफ है। पेट काट कर भी पढ़ना पड़े तो पढ़ाई को अधिमान दो। यह सारी कथा लिखने का उद्देश्य मात्र इतना ही है कि विदेश में जाकर उन्होंने शिक्षा से इतर, आर्थिक रूप से सम्पन्नता के लिये रास्ते तलाशने की कोशिश नहीं की। वे रास्ते उन दिनों भी अमेरिका व ब्रिटेन में सहजता से उपलब्ध थे। लेकिन बाबा साहेब ने स्वयं को ज्ञानार्जन के लिये ही समर्पित कर दिया। क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि वे केवल अपनी प्रगति का रास्ता नहीं तलाश रहे, बल्कि भारत के पूरे वंचित समाज के लिये रास्ता तलाश रहे हैं और वह रास्ता केवल और केवल शिक्षा के माध्यम से ही निकलेगा। वह अपने आचरण से इसका उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते थे। वडोदरा के महाराजा और भीमराव आंबेडकर का यह संवाद जो चांगदेव खैरमोडे ने उद्धृत किया है, अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

महाराजा – तुम किस विषय की पढ़ाई करना चाहते हो ?

भीमराव– मैं समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र और विशेष रूप से पब्लिक फायनांस की पढ़ाई करना चाहता हूँ।

महाराजा– इस विषय की पढ़ाई करके तुम आगे क्या करना चाहते हो ?

भीमराव– इस विषय के अध्ययन से मुझे इस प्रकार के रास्ते दिखाई देंगे, जिससे कि मैं अपने समाज की पतनावस्था को सुधार सकूँ।

महाराजा (हँसते हुये)– लेकिन तुम हमारी नौकरी करोगे या नहीं ? फिर तुम पढ़ाई, नौकरी और समाज सेवा आदि सभी बातें एक साथ कैसे पूरी कर सकोगे?

भीमराव– यदि महाराजा ने मुझे उस तरह का मौका दिया, तो मैं ये सारी बातें सही ढंग से पूरी करके दिखा दूँगा।

भीमराव की योजना स्पष्ट है। वंचित समाज की दीन हीन अवस्था को कैसे ठीक करना है, इसका रास्ता भी शिक्षा से ही पता चलेगा। एक बार रास्ता पता चल जाये , तो उसे फतेह करना इतना मुश्किल नहीं है। लेकिन ध्यान रखना होगा, आंबेडकर के सूत्र में

शिक्षा, एक बड़ी श्रृंखला का पहला हिस्सा है। एकता और संघर्ष उसके साथ ही जुड़ा हुआ है। बाबा साहेब जब महाराजा को पढ़ाई, नौकरी और समाज सेवा एक साथ साध लेने का संकल्प सुनाते हैं तो उनके मन में शिक्षा, एकता और संघर्ष का यह त्रिसूत्र ही दिखाई देता है। लेकिन बाबा साहेब शिक्षा की महत्ता रेखांकित करने के साथ–साथ उसको प्राप्त करने के पात्र की भी चर्चा करते हैं। वे कहते हैं, 'शिक्षा दुधारी शस्त्र हैं। इसलिये उसे चलाना खतरे से भरा रहता है। चरित्रहीन व विनयहीन सुशिक्षित व्यक्ति पशु से भी अधिक खतरनाक होता है। यदि सुशिक्षित व्यक्ति शिक्षा गरीब जनता के हित विरोधी होगी, तो वह व्यक्ति समाज के लिये अभिशाप बन जाता है। ऐसे सुशिक्षितों का धिक्कार है। शिक्षा से चरित्र अधिक महत्व का है। युवकों की धर्म विरोधी प्रवृति देखकर मुझे दुख होता है। कुछ लोगों का मानना है कि धर्म अफीम की गोली है। परन्तु यह सत्य नहीं है। मेरे अन्दर जो अच्छे गुण हैं अथवा मेरी शिक्षा के कारण समाज का जो कुछ हित हुआ होगा, वे मेरे अन्तर्मन की धार्मिक भावना के कारण ही है। मुझे धर्म चाहिये। परन्तु धर्म के नाम पर चलने वाला पाखंड नहीं।

बाबा साहेब का अभिमत स्पष्ट है। शिक्षा जनहितकारी होनी चाहिये। शिक्षा से प्राप्त योग्यता का उपयोग वंचित समाज के कल्याण के लिये किया जाना चाहिये न कि उसके शोषण के लिये। शिक्षा का उद्देश्य 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' होना चाहिये न कि 'स्व हिताय, स्व सुखाय।' यही कारण है कि आम्बेडकर शिक्षा और शील को एक दूसरे का पूरक मानते थे। लेकिन शिक्षित व्यक्ति शीलविहीन हो इससे बड़ी त्रासदी और कोई नहीं हो सकती। आम्बेडकर कहते हैं, इसमें कोई सन्देह ही नहीं कि शिक्षा का महत्व है। लेकिन शिक्षा के साथ ही मनुष्य का शील भी सुधरना चाहिये। शील के बिना शिक्षा का मूल्य शून्य है। ज्ञान तलवार की धार जैसा है। तलवार का सदुपयोग अथवा दुरुपयोग उसको पकड़ने वाले पर निर्भर करता है। वह उससे किसी का खून भी कर सकता है और किसी की रक्षा भी कर सकता है। यदि पढ़ा लिखा व्यक्ति शीलवान होगा तो वह अपने ज्ञान का उपयोग लोगों के कल्याण के लिये करेगा। लेकिन यदि उसका शील अच्छा नहीं होगा तो वह अपने ज्ञान से लोगों का अकल्याण भी कर सकता है। भीमराव आंबेडकर ने स्वयं अपनी शिक्षा का उपयोग अपनी सुख सुविधा के लिये नहीं बल्कि वंचित समाज के कल्याण के लिये किया।

शिक्षा का इतना महत्व है तो शिक्षा देने वाले शिक्षक का महत्व तो उससे भी कई गुणा बढ़ जाता है। क्योंकि शिक्षा केवल किताबों से नहीं मिलती, वह शिक्षक के आचरण व व्यवहार से भी मिलती है। शिक्षा संस्कार बनाती है और संस्कार शिक्षक के आचरण से ही बनते हैं। इसलिये शिक्षा के मामले में बाबा साहेब शिक्षक की भूमिका और चयन को लेकर अत्यन्त सतर्क रहते थे। उन्होंने 1949 में अपने एक मित्र को लिखा, महाविद्यालय का प्राचार्य किसे नियुक्त किया जाये, इसको लेकर चिन्ता में हूँ। वेतनमात्र के लिये काम करने वाला प्राचार्य, संस्था को अपना मानकर त्याग व आस्थापूर्वक कार्य नहीं करता। वह केवल स्वयं का विचार करता है । लेकिन मुझे तो योग्य प्राचार्य चाहिये। शिक्षा और शिक्षक के मामले में बाबा साहेब जाति भेद से कहीं दूर थे। उनके अपने मिलिन्द महाविद्यालय के किसी आचार्य ने उनसे एक दफा पूछा कि आप इतने ब्राह्मण विरोधी क्यों हैं ? आंबेडकर का उत्तर मार्मिक था, मेरे मित्र! यदि मैं ब्राह्मण विरोधी होता तो तुम इस महाविद्यालय में न होते। मेरी संस्था के शिक्षक बहुधा ब्राह्मण ही हैं। मेरा विरोध ब्राह्मण जाति से नहीं बल्कि ब्राह्मण्य से है।

इसमें कोई शक नहीं कि आंबेडकर शिक्षा को वंचित समाज के कल्याण और प्रगति का धारदार और कारगर हथियार मानते थे। लेकिन शिक्षा को वे आईसोलेशन में पारिभाषित नहीं करते थे बल्कि उसके सर्वग्राही अर्थों में ही ग्रहण करते थे।

(लेखक पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड में वाईस चेयरमैन हैं)

ईशान्य प्रदेश के सिलचर में दो दिवसीय युवा सम्मेलन

'शक्तिशाली भारत के निर्माण में युवा शक्ति ही अंतिम समाधान'

– सुनील आंबेकर

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, ईशान्य प्रदेश का दो दिवसीय युवा सम्मेलन 22 एवं 23 मार्च 2015 को सिलचर इकाई के तत्वावधान में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान सिलचर के सभागार में सम्पन्न हुआ। युवा सम्मेलन का शुभारम्भ अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री श्री श्रीहरि बोरिकर ने दीप प्रज्वलित करके किया। उद्घाटन सत्र में उन्होंने कहा विद्यार्थी परिषद देश का ही नहीं बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा छात्र संगठन है। देश से नशा एवं भ्रष्टाचार को दूर करने में विद्यार्थी परिषद की अहम भूमिका रही है। देश की समस्याओं के समाधान के लिए युवा शक्ति को आगे आना होगा।

युवा सम्मेलन में अलग–अलग दो सत्रों में पूरे उत्तर पूर्व के राज्यों की विभिन्न समस्याओं के समाधान पर विस्तार से चर्चा हुई। इसमें परिषद कार्य का विस्तार हो इस पर भी गहन विचार विमर्श हुआ। 23 मार्च को युवा सम्मेलन के समापन सत्र में अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आंबेकर ने 'भारत को महाशक्ति बनाने में युवाओं की भूमिका' विषय पर बोलते हुये कहा– देश को महाशक्ति बनाना जरूरी है, वो केवल धन बल या सैन्य बल से सम्भव नहीं है। इसके लिये हमारे युवा वर्ग को मजबूत और साहसी होना होगा। इसके साथ–साथ युवा समाज को भारत के ऐतिहासिक सत्य को समझना होगा। महाशक्ति के साथ–साथ देश को महान होना भी जरूरी है क्योंकि शक्ति का जीवन भी ज्यादा नहीं होता। कोई कितनी बड़ी ही महाशक्ति क्यों न बन जाये एक न एक दिन उसकी शक्ति कम होती है। उन्होंने विश्व की कई ऐसी महाशक्तियों का जिक्र किया जो आज के दौर में गौण हो चुकी है।

श्री सुनील आंबेकर ने कहा आज हमारे देश की गरिमा हमारे महापुरुषों, ऋषि–मुनियों द्वारा किये गये सत्कार्यों तथा उनके ज्ञान से ही है। यही महानता हमें धरोहर के रूप में प्राप्त है। इसके लिए बच्चों में, युवा पीढ़ी में संस्कार की जरूरत है। आज कम पढ़े–लिखे लोग देशभक्त हैं, यदि उन्हें कोई बेईमानी भी करनी है तो छोटी–मोटी करते हैं, किन्तु जो जितना उच्च शिक्षित है उतना ही बड़े पैमाने पर घोटाला करता है। इसलिये अपने बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ संस्कार की शिक्षा उतनी ही आवश्यक है। यदि हम अपने बच्चों को रामायण की कथा ही नहीं सुनायेंगे तो यही बच्चे बड़े होकर माँ–बाप, भाई–बहिन जैसे अहम रिश्तों को अपने स्वार्थ की बलि चढ़ा देंगे।

श्री आंबेकर ने कहा कि संस्कारित, साहसी और शिक्षित युवा शक्ति को खड़ा करके भारत को विश्व में महाशक्ति के रूप में स्थापित करना ही विद्यार्थी परिषद का उद्देश्य है। उन्होंने बताया 32 लाख सदस्यों वाला विद्यार्थी परिषद देश का सबसे बड़ा छात्र संगठन है। विद्यार्थी परिषद देश में परिवर्तन की मशाल जलायेगा एवं आने वाले समय में हम सशक्त भारत का निर्माण करेंगे।

इस सत्र में असम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ दास गुप्ता ने युवाओं से आह्वान किया कि अपने अंदर की छिपी प्रतिभा को जगाएं। उन्होंने देश को महाशक्ति बनाने में युवाओं को अनुशासित व संयमी होने का आह्वान किया। इसी युवा सम्मेलन में एनआईटी, सिलचर के प्रतिभाशाली छात्र विवेक जैन को भी राष्ट्रीय महामंत्री श्री श्रीहरि बोरिकर ने सम्मानित किया। प्रदेश अध्यक्ष डा. संजीव भट्टाचार्य ने अतिथियों का स्वागत किया तथा प्रदेश मंत्री मनोज कान्ति दास ने सभी का आभार व्यक्त किया। वन्देमातरम के साथ दो दिवसीय युवा सम्मेलन का समापन हुआ। युवा सम्मेलन में समाज के विभिन्न समाजसेवी, शिक्षाविद एवं पूरे उत्तर पूर्व प्रांत के कोने–कोने से आये विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

आगरा में यूपीपीएससी चेयरमैन के पुतले की अर्थी निकालने पर बवाल

प्रदर्शनकारियों को बनाया लुटेरा, भेजा जेल

पुलिस की मौजूदगी में विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं को डंडे से पीटते यूपीपीएससी चेयरमैन के भाई अरविंद यादव

कई वर्षों से उत्तर प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था की हालत बदतर बनी हुई है। शिक्षा के व्यापारीकरण के साथ गुणवत्ता का ह्रास भी नजर आ रहा है। इसके साथ ही नकल जैसे प्रवृत्ति भी व्यापक स्तर पर फैलती दिखाई दे रही है। प्रश्न पत्र लीक होना आम बात सी हो गई है। अब तक रेलवे, मेडिकल और इंजीनियरिंग की परिक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक होते थे। पहली बार उत्तर प्रदेश प्रशासनिक सेवा की सर्वोच्च परीक्षा का पूर्व (prelims) परीक्षा के प्रश्न पत्र लीक हुए।

यूपीपीएसीसी की पूर्व की परीक्षा 29 मार्च 2015 को थी। उसी दिन परीक्षा शुरू होने से पहले वाट्सऐप के माध्यम से पेपर लीक हुए। प्रश्नपत्र लीक करने के लिए पांच–पांच लाख रूपये लिए गए। पेपर लीक होने की सूचना फैलने पर आयोग ने परीक्षा रद्द की। नए सिरे से परिक्षा अब 10 मई 2015 को होगी।

पेपर लीक होने के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) लगातार प्रदर्शन करती रही है। उसी कड़ी में विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता आगरा के कमला नगर के ब्लॉक में स्थित युपीपीएससी

लखनऊ में यूपीपीएससी के चेयरमैन अनिल यादव से इस्तीफे की मांग करते अभाविप कार्यकर्ता

चेयरमैन अखिल यादव के आवास के सामने प्रदर्शन करने पहुंचे। 3 अप्रैल को दोपहर 1 बजे चेयरमैन के पुतले की अर्थी निकालते हुए विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता चेयरमैन अखिल यादव के विरोध में नारे बाजी कर रहे थे।

पुतले को आग लगाते उससे पहले यूपीपएससी चेयरमैन के भाई अनिल और चेयरमैन के समर्थक हाथ में लाठी डंडा लेकर आए और कार्यकर्ताओं पर टूट पड़े। शांतिपूर्ण ढंग से प्रदर्शन कर रहे कार्यकर्ताओं पर पत्थर भी फेंके गए। यह सब पुलिस की मौजूदगी में हुआ। पुलिस उन्हें रोकने के बजाय सपाई प्रेम में अखिल यादव और अनिल के समर्थकों का साथ देने लगी। पुलिस ने भी लाठी चार्ज किया जो छात्र सामने आया उसे लाठियों से पीटा गया।

छात्र नेताओं में श्री नवीन गौतम, प्रशांत परमार, जेडी चाहर के कपड़े फाड़े गए। उन्हें धमकी भी दी गई भागो वरना जेल में डाल देंगे। पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार करने के बजाय अभाविप के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

पुलिस थाने में अरविन्द यादव ने एफआईआर दर्ज कराया। जिसके आधार पर पुलिस द्वारा नवीन गौतम, प्रशांत सिंह, सौरभ परासर को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया।

दोपहर बाद आक्रोशित अभाविप कार्यकर्ताओं और भाजपा विधायक जगन गर, महानगर अध्यक्ष नगेन्द्र प्रसाद रामा समेत कई भाजपा नेता न्यू आगरा पहुंचे। यहां अ. भा. वि. प. कार्यकर्ताओं की ओर से तहरीर दी गई। उसमें अरविंद यादव पर फायरिंग करने, मारपीट और गाली गलौज करने के आरोप लगाए। पुलिस ने मुकदमा दर्ज करने से इन्कार कर दिया। पुलिस के इस रवैये के विरोध में थाने में ही भाजपा नेता और विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता धरने पर बैठ गए। शाम साढ़े सात बजे तक थाने में धरना जारी रहा। बाद में पुलिस सभी भाजपा नेता और अभाविप कार्यकर्ताओं को हिरासत में लेकर दो गाड़ियों से कलक्ट्रेट पहुंची जहां सभी को रिहा कर दिया गया।

शुक्रवार को प्रदर्शन कर रहे अभाविप कार्यकताओं पर लाठी चार्ज और गलत मुकदमें के तहत अभाविप नेताओं को जेल भेजने के बाद विद्यार्थी परिषद ने प्रदेश स्तर पर आंदोलन की तैयारी की है।

विद्यार्थी परिषद के प्रदेश संगठन मंत्री दीपक ऋषि ने कहा कि प्रदेश सरकार ने प्रतियोगी परिक्षाओं को मजाक बना दिया है। एक विशेष वर्ग के लोगों की भर्ती की जा रही है। होनहार छात्र इन कृत्यों के बीच खुद को ठगा सा महसूस कर रहा है। इसका विरोध करने पर उन्हें पीटा जाता है। फर्जी मुकदमें में जेल भेज दिया जाता है

प्रांत प्रमुख शशांक चौधरी ने कहा कि परिक्षाओं के नाम पर चल रहा रैकेट सब कुछ फिक्स कर रहा है। इसका हर हाल में हम विरोध करेंगे। प्रदेश स्तर पर पत्रक के माध्यम से इस साजिश का पर्दाफाश भी करेंगे।

शिक्षा और राजनीति के पुरोधाओं को भारत रत्न

✍ दीपक बरनवाल

पूरी दुनिया जब बड़ा दिन मनाने में जुटी हुई थी। उसी दिन भारत सरकार ने दो महान विभूतियों को भारत रत्न देने का निर्णय लिया। पहले हैं महान राजनेता और आम सहमति की राजनीति के अगुवा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी। दूसरे हैं, स्वतंत्रता सेनानी, महान शिक्षाविद् और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक स्वर्गीय महामना मदन मोहन मालवीय। खास बात यह कि यह घोषणा श्री वाजपेयी जी के 90वें जन्मदिन और स्व. मालवीय जी की 153वीं जयंती के एक दिन पहले की गई। स्वर्गीय महामना को मरणोपरांत भारत रत्न से 30 मार्च को राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने सम्मानित किया। यह सम्मान उनके परिजनों ने ग्रहण किया। वहीं राष्ट्रवादी नेता व पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को प्रोटोकॉल को एक तरफ रखते हुए राष्ट्रपति ने वाजपेयी के आवास पर पहुंचकर 27 मार्च को सम्मानित किया। वह इन दिनों अस्वस्थ चल रहे हैं। इस अवसर पर वाजपेयी के कुछ नजदीकी संबंधी, उप राष्ट्रपति हामिद अंसारी, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री राजनाथ सिंह आदि उपस्थित थे।

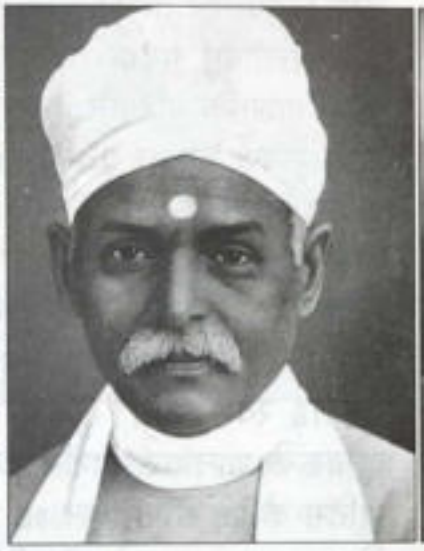

ग्वालियर में जन्मे वाजपेयी पहले जनसंघ के अध्यक्ष फिर भाजपा के संस्थापक अध्यक्ष रहे। वह तीन बार प्रधानमंत्री बने। वह देश के ऐसे पहले प्रधानमंत्री बने, जिनका कांग्रेस से कभी नाता नहीं रहा। साथ ही वह कांग्रेस के अलावा के किसी अन्य दल के ऐसे प्रधानमंत्री रहे जिन्होंने पांच वर्ष का कार्यकाल पूरा किया। श्री वाजपेयी की लोकप्रियता दलगत सीमाओं से परे रही है। करिश्माई नेता, ओजस्वी वक्ता और प्रखर कवि के रूप में प्रख्यात वाजपेयी को साहसिक पहल करने के लिए भी जाना जाता है।

देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू,इंदिरा गांधी और अब वाजपेयी ऐसे प्रधानमंत्री हैं जिन्हें उनके जीवनकाल में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

महामना की संज्ञा से विख्यात मदन मोहन मालवीय ने देश को आजादी दिलाने में सक्रिय भूमिका निभाई और जीवन पर्यंत उस लक्ष्य को साधने के लिए संघर्ष करते रहे। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान महामना चार बार 1909, 1918, 1932, 1933 कांग्रेस के अध्यक्ष हुए। महामना वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कांग्रेस की दोहरी भूमिका पर 1886 में सवाल खड़ा किया। उन्होंने कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में कहा था 'हम लड़ेंगे, सिर्फ लड़ेंगे और तब तक लड़ेंगे' जब तक हम खुद को आजाद नहीं करा लेते। यह विडंबना ही रही कि आजादी के एक साल पहले 12 नवम्बर 1946 में उनका निधन हो गया। अपनी मृत्यु के दस दिन पहले उन्होंने कहा था कि मैं मोक्ष नहीं चाहता, मैं एक और जन्म देश और विश्वविद्यालयों की सेवा के लिए लेना चाहता हूँ।

गुमनामी में जीते गर्दिश के सितारे

✍ दीपक कुमार

केरल में 31 जनवरी से 14 फरवरी 2015 आयोजित हुए 35 वें राष्ट्रीय खेलों में तमाम रिकॉर्ड टूटे और बने। कई सितारों ने फलक पर जगह बनाई और तमाम खिलाड़ियों की चमक फीकी रही। खेल का रोमांच चरम पर रहा, खिलाड़ियों ने जी तोड़ प्रदर्शन कर पदक जुटाए। लेकिन, कमी थी तो महज उनको सराहने वाले दर्शकों की। वह न टीवी चैनलों की फटाफट खबरों का हिस्सा बने और न ही अखबारी सुर्खियां। जहां रणजी और आईपीएल क्रिकेट खेलने वाले खिलाड़ी भी भगवान जैसा दर्जा पा जाते हैं, वहां भविष्य के ओलंपिक सितारों ने गुमनामी में ही पदक जीते और हार गए। यही है हमारा राष्ट्रीय खेलों के प्रति रवैया! यहां क्रिकेट तो धर्म है और अन्य खेलों की चर्चा भी धर्म विरुद्ध!

टीवी चैनलों और अखबारों ने क्रिकेट विश्व कप से दो महीने पहले से ही माहौल बनाना शुरू कर दिया था, लेकिन राष्ट्रीय खेलों को टूर्नामेंट के दौरान भी कोई कवरेज नहीं मिल सकी। सच तो यह है कि इन खेलों की चर्चा तभी होती है, जब यहां से निकली अरूणिमा सिन्हा जैसी किसी दिग्गज खिलाड़ी को ट्रेन के सामान्य डिब्बे से कोई उपद्रवी धक्का दे देता है या कोई उससे धोखे से शादी कर लेता है। या फिर उसकी चर्चा तब होती है, जब वह खेल समुदाय, दर्शकों की बेरूखी और मुफलिसी के चलते मौत को गले लगा ले। राष्ट्रीय खेलों के आयोजन का मकसद देश के हर हिस्से में उभर रही प्रतिभाओं को एक मंच उपलब्ध कराना होता है, जहां ओलंपिक और राष्ट्रमंडल खेलों जैसी अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं के लिए खिलाड़ी तैयार किए जा सकें। लेकिन जब खेलों की हमारी नर्सरी ही ठीक नहीं होगी तो कौन अपना सर्वस्व योगदान कर खेल में बाजी लगाएगा।

राष्ट्रीय खेल की किसी भी स्पर्धा के लिए आईपीएल और विश्वकप जैसे आयोजनों से कहीं अधिक पसीना बहाना पड़ता है, उपेक्षा होती है, सुविधाएं नहीं मिलतीं, उसके बावजूद। केरल में आयोजित हुए 35वें राष्ट्रीय खेलों में भी पिछले संस्करणों जैसी ही समस्याएं सामने आईं। शीर्ष खिलाड़ियों ने अलग–अलग कारणों से नाम वापस ले लिए, स्टेडियम पूरी तरह तैयार नहीं थे, सचिन तेंदुलकर की मौजूदगी के बावजूद उद्घाटन समारोह फीका रहा और सबसे ऊपर आयोजकों पर बुनियादी ढांचे के विकास में भ्रष्टाचार के आरोप लगे। बावजूद इसके खिलाड़ियों ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन जारी रखा। लगातार तीसरे साल सेना खेल नियंत्रण बोर्ड (एसएससीबी) पदक तालिका में पहले स्थान पर रहा। हालांकि मेजबान केरल ने कुल 162 पदकों के साथ सबसे ज्यादा पदक जीते और प्रतियोगिता में अपना अब तक का सबसे शानदार प्रदर्शन किया। खेल के पहले कुछ दिन तैराकों का दबदबा रहा जिन्होंने तरणताल में कई पुराने रिकार्ड डुबो दिए तो कुश्ती में हरियाणा ने अपना दबदबा कायम रखते हुए 18 स्वर्ण जीते। वहीं जीतू राय और विजय कुमार के शानदार प्रदर्शन के सहारे एसएससीबी ने शूटिंग के 26 में से कुल 15 स्वर्ण पदक अपने नाम किए। अगर नए चेहरों की बात करें तो तैराकी प्रतिस्पर्धाओं में सबसे बड़े स्टार स्थानीय तैराक सजन प्रकाश रहे जिन्होंने छह स्वर्ण पदक जीते। शानदार प्रदर्शन की वजह से प्रकाश को अपने राज्य में 'गोल्डन शार्क' का नाम मिला। लिंग परीक्षण में असफल रहने के बाद लगे अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ रहीं ओडिशा की दूती चंद रिकार्ड बनाकर 100 मीटर में चौंपियन बनीं। लेकिन इनकी कोई पहचान नहीं, हमारे–आपके सामने आकर यह अपना नाम और परिचय बताएं, तभी शायद हम इन खिलाड़ियों को जान पाएं। यह है हमारी खेलों के प्रति चिंता। दुनिया की तीसरी

अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर भारत का ओलंपिक खेलों में शीर्ष 10 में कभी स्थान नहीं आता तो इसकी वजह हमारा यही रवैया है। जिस देश में खेलों की नर्सरी ही न हो, वहां अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में पदक जीतने की उम्मीद करना बेमानी है।

सेना के कोटे के खिलाड़ियों और हरियाणा एवं पूर्वोत्तर राज्यों के कुछ खिलाड़ियों को छोड़ दें तो पूरे देश की तस्वीर निराशाजनक है। यदि हम वास्तव में ओलंपिक में छाना चाहते हैं, दुनिया में अपनी खेल प्रतिभा का लोहा मनवाना चाहते हैं तो हमें अपने सितारों की चमक से अभिभूत होना सीखना होगा। उन्हें सराहना, सुविधाएं मुहैया कराना, कैरियर की चिंताएं दूर करना हमारी प्राथमिकता में होना चाहिए। वरना ओलंपिक और राष्ट्रमंडल जैसे आयोजन हमारे लिए रस्म अदायगी भर हो जाएंगे।

'जल है तो हम है' - प्रकाश जावड़ेकर

जल संरक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर को स्मृति चिह्न प्रदान करते डूसू अध्यक्ष मोहित नागर

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) द्वारा प्राकृतिक जल पुनरूद्धार एवं संरक्षण, पर एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन 31 मार्च, 2015 को दिल्ली विश्वविद्यालय के (उत्तरी परिसर) कांफ्रेंस सेंटर में किया गया। इस सम्मेलन के समापन में केंद्रीय वन एवं जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर को मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया था। अभाविप के राष्ट्रीय सहसंगठन मंत्री श्री श्रीनिवास को सम्मानीय अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। इस सम्मेलन में विश्वविद्यालय के सैकड़ों छात्रों ने भाग लिया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य था जल को संरक्षण देना। मुख्य अतिथि श्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि "डूसू द्वारा जल को संरक्षण देने के बारे में पहल की गई। दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों को यह अवसर नये सिरे तक ले जाना पड़ेगा। हमें जीवन में जल के महत्व को जानना होगा। जल है तो हम है, उसके बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। कार्यक्रम में अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री निवास ने कहा कि "जल की महत्ता को हम नहीं जान सकते कि जल हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। हमें प्रकृति के साथ मिल–जुलकर रहना होगा ताकि भविष्य में पानी की कमी न हो।" डूसू अध्यक्ष श्री मोहित नागर ने कहा कि "जल है तो कल है। डूसू जल को भविष्य एवं वर्तमान में बचाए रखने हेतु पहले ही पहल कर चुका है। उन्होंने कहा कि मैं सभी लोगों से प्रार्थना करता हूं कि जल बहुत कीमती है इसको व्यर्थ न करे एवं भविष्य हेतु इसका संरक्षण करें।"

कोहिमा विजय दिवस (8 अप्रैल) पर विशेष

जब कल्बेट के घर पधारे नेताजी सुभाष

✍ आशुतोष

नागा राजा कल्बेट की प्रसन्नता का पारावार न था। अंग्रेज जिसके नाम से भय खाते थे, वे सुभाष चन्द्र बोस नागालैंड के उस छोटे से गांव में कल्बेट के घर जा रहे थे। 8 अप्रैल 1944 के ऐतिहासिक दिन नागालैंड की राजधानी कोहिमा पर आजाद हिन्द फौज ने तिरंगा लहराया और भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में एक स्वर्णिम पृष्ठ जुड़ गया। लेकिन यह विजय भी सरल न थी।

संसाधनों और खाद्य सामग्री के अभाव में आजाद हिन्द फौज के सैनिक केले के तने और जंगली बांस की कोमल पत्तियां तक उबाल के खाने को विवश थे ऐसे समय में ही सहायता के लिये आगे आये थे नागा सरदार राजा कल्बेट। नागाओं ने अपने हिस्से का भी भोजन इन सैनिकों को खिलाया। नेताजी कल्बेट और उसके गांव–समाज के लोगों द्वारा आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को दी गयी सहायता से इतने अभिभूत थे कि युद्ध के इस भीषण दौर में भी कृतज्ञता प्रकट करने के लिये राजा कल्बेट के गांव गये।

इससे पहले 4 फरवरी 1944 की एक सुबह। आजाद हिन्द फौज प्रस्थान के लिये तैयार है। सैनिकों को कूच का आदेश देते हुए सुभाष चन्द्र बोस कह रहे थे। "दूर, बहुत दूर, नदी के उस पार, पहाड़ और जंगलों के उस पार है हमारा देश। जहां की मिट्टी में हम पैदा हुए हैं, वहीं हम लौट जायेंगे"।

"सुनो, भारत हमें बुला रहा है। बुला रहे हैं अड़तीस करोड़ भारतवासी। रक्त पुकार रहा है रक्त को। अगर ईश्वर ने चाहा तो हम बलिदान देंगे। लेकिन मरने से पहले उस रास्ते को चूमेंगे जिस पर होकर हमारी सेना गुजरेगी। दिल्ली का रास्ता ही स्वतंत्रता का रास्ता है। आज से हमारा नारा होगा स्वाधीनता या मृत्यु। चलो दिल्ली!"

जंगलों और पहाड़ों को पार करते हुए आजाद हिन्द फौज के सैनिक निरंतर बढ़ रहे थे। रास्ते में अराकान जीता। ताऊंग बाजार पर अधिकार किया। 1 मार्च को जीता सेटाबिन, 5 को कालादि और 8 मार्च को होआइट और चार दिन बाद लेनाकट। 15 मार्च को केनेडी पर विजय पायी जिसके पार था भारत। 19 मार्च की भोर में यह सेना भारत की धरती पर थी। आह्लाद से नाचते सैनिक मार्ग के सारे कष्ट भूल गये थे। 22 मार्च को जापान के जनरल तोजो ने घोषणा दोहराई – "भारत के जीते हुए भाग पर पूरी तरह से आजाद हिन्द सरकार का ही अधिकार होगा"।

मेजर जनरल एम. जेड. कियानी के नेतृत्व में पहली डिवीजन आगे बढ़ रही थी। इसके अंतर्गत तीन ब्रिगेड थीं। सुभाष ब्रिगेड का संचालन मेजर जनरल शाहनवाज खां, गांधी ब्रिगेड का कर्नल आई. जे. कयानी तथा आजाद ब्रिगेड का नेतृत्व कर्नल गुलजारा सिंह कर रहे थे। लक्ष्य था नागालैंड की राजधानी कोहिमा। डिवीजन को आठ सेक्टरों में बांट कर गुलजारा सिंह, ठाकुर सिंह, प्रीतम सिंह, पूरन सिंह, एस. मलिक, रतूड़ी, बुरहानुद्दीन और रामस्वरूप आठ दिशाओं से आगे बढ़ रहे थे। कोहिमा में पहले से डटी अंग्रेजों की यॉर्कशायर रेजिमेन्ट, डरहम लाइट इनफैन्ट्री, रॉयल स्कट्स आदि इनके मार्ग में बाधा बने हुए थे।

घेरा कसता गया। पहले अधिकार में आया जी टी पहाड़, फिर डिप्टी कमिश्नर का बंगला। घमासान लड़ाई हुई। 8 अप्रैल 1944 को इस युद्ध का यह

आखिरी मोर्चे पर विजय प्राप्त कर कर्नल ठाकुर सिंह ने कोहिमा पर तिरंगा लहरा दिया।

6 जुलाई को नेताजी ने महात्मा गांधी के लिये रेडियो पर संदेश प्रसारित किया– "स्वाधीनता प्राप्ति के लिये भारत की अंतिम लड़ाई जारी है। आजाद हिन्द फौज अब भारत के भीतर बहादुरी के साथ लड़ रही है। हजारों तरह की विघ्न–बाधाओं के बावजूद वे आगे बढ़ रहे हैं। राष्ट्रपिता, भारत के इस पवित्र मुक्ति संग्राम में हम आपकी शुभेच्छा और आशीर्वाद चाहते हैं"।

9 जुलाई को रंगून में नेताजी ने कहा– "हम जानते हैं कि उनके रसद और अस्त्र–शस्त्र हमसे कहीं ज्यादा अच्छे हैं क्योंकि हमसे लड़ने के लिये, बहुत पहले से वे भारत का शोषण कर रहे हैं। इस पर भी हम उन्हें पीछे धकेलने में सक्षम हुए हैं। क्योंकि उनकी शक्ति बीयर, रम, पोर्क या मांस से नहीं आयी है। आयी है आत्मविश्वास, आत्मत्याग, वीरता और अविचल धैर्य के रास्ते"।

11 जुलाई को बहादुर शाह जफर की समाधि पर जाकर उन्होंने संकल्प व्यक्त किया– "यदि मनुष्य हैं तो ब्रिटिशों से, अकथनीय अत्याचार सहन कर जिन वीरों ने अकाल मृत्यु का वरण किया है, उसका बदला लेकर रहेंगे। जिन ब्रिटिशों ने हमारे स्वाधीनता की वीरों का खून बहाया है, उन पर अमानुषिक अत्याचार किया है, उन्हें यह ऋण चुकाना ही पड़ेगा"।

ब्रिटिश सेना जब पीछे हट रही थी तभी उसे भारी अमेरिकन सहायता प्राप्त हो गयी। अब पासा पलट गया था। उसी समय तेज वर्षा ने आजाद हिन्द फौज को घेर लिया। सेना को लौटने के आदेश दिये गये। लेकिन यह वापसी और अधिक करुण थी।

मेजर जनरल शाहनवाज ने लिखा है– "न खाने के लिये रसद थी और न दवायें। इस जंगल में बहुत बड़ी–बड़ी मक्खियां थीं जो कहीं भी घाव पाकर उस पर बैठ जाती थीं तो आधे घण्टे में उस घाव पर हजारों कीड़े नजर आने लगते। रास्ते बह गये थे और नये बनाये रास्तों में पानी भर गया था। काफी सैनिक उसी कीचड़ में फंस कर मर गये। बहुत से लोग पेचिश और मलेरिया से बीमार थे। रास्ते के दोनों ओर जापानी और भारतीय सैनिकों की लाशें पड़ी थी। चार दिन पहले मरे घोड़े का मांस खाते भी देखा अपने सैनिकों को। कोई भूख से तो कोई थकावट से मरा। किसी ने कष्ट न सहन कर पाने की स्थिति में खुद को गोली मार ली"।

एक दिन मुझे सड़क के किनारे एक घायल सिपाही दिखायी पड़ा। वह पड़ा हुआ मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके घाव पर अनगिनत कीड़े बिलबिला रहे थे। मुझे देख उठने की कोशिश की पर वह उठ न सका। उसने मुझे पास बैठने का इशारा किया। उसने मुझे कहा – "आप लौट रहे हैं, आपकी नेताजी से भेंट जरूर होगी। मेरी तरफ से उन्हें जय हिन्द कहियेगा और कह दीजियेगा कि मैंने उन्हें जिस बात का वचन दिया था उसका अक्षरशः पालन किया है। मेरी मृत्यु कैसे हुई, यह उन्हें साफ–साफ बता दीजियेगा। मुझे जीते–जी कीडे किस तरह से कुतर–कुतर कर खा रहे हैं, यह भी बताइयेगा। एक बात और उनसे बता दीजियेगा – इस भयंकर यन्त्रणा में भी मैं शांति और आनंद में हूं क्योंकि हर पल मुझे लग रहा है कि अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिये मैं प्राण त्याग रहा हूं"। सैनिकों के इन कष्टों का समाचार नेताजी तक भी पहुंचता रहा।

हिरोशिमा और नागा साकी पर एटमी हमले के पश्चात जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया। 11 अगस्त को यह समाचार नेताजी तक पहुंचा। उनकी प्रतिक्रिया थी – "जापान की लड़ाई खत्म हो सकती है, हमारी नहीं। उनके आत्मसमर्पण का मतलब भारत की मुक्ति वाहिनी का आत्मसमर्पण नहीं है। आजाद हिन्द फौज इस पराजय को स्वीकार नहीं करेगी"।

12 अगस्त को वे सिंगापुर पहुंचे। समूचे दक्षिणपूर्व एशिया में फैले आजाद हिन्द फौज के सूत्रों को संदेश भिजवाने और आगे की रणनीति तय करने में तीन दिन बीत गये।

15 अगस्त 1944 को शत्रु सेना के निकट पहुंचने के समाचार मिलने लगे। उन्होंने कर्नल स्ट्रेसी और कैप्टन आर. ए. मलिक को बुलावा भेजा। उनकी आंखों के आगे उन हजारों सैनिकों के चेहरे घूम रहे थे जिन्होंने कोहिमा, इम्फाल और विशनपुर में भारत की स्वाधीनता के लिये अपने प्राण दिये थे। नेताजी ने स्ट्रेसी की ओर देखा और बोले – "किसी भी समय शत्रु यहां पहुंच सकता है। उनके पहुंचने के पहले इन शहीदों को समर्पित स्मारक बन जाना चाहिये। मैं चाहता हूं कि सिंगापुर में कदम रखते ही ब्रिटिश समुद्र की ओर सिर उठाये इस शहीद स्तम्भ को देख सकें"। तुम यह काम जरूर कर सकोगे। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे। तीन दिन और तीन रात अथक परिश्रम करके स्ट्रेसी ने नेताजी की इच्छा को साकार कर दिखाया।

कुछ वर्ष पूर्व ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के राज्यारोहण के साठ साल पूरे होने का समारोह ब्रिटेन में जब मनाया गया तो ब्रिटेन के प्रिन्स एंड्र्यू भारत के दौरे पर आये। जिस ब्रिटेन के राज्य में कहा जाता था कि सूरज कभी डूबता नहीं था, वही आज सिमट कर इतना छोटा रह गया है कि कमजोर नजर वाले नक्शे पर ढूंढ भी नहीं सकते। 1857 का स्वतंत्र्य समर भारतीय इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है तो ब्रिटेन के लिये वह काला अध्याय। कुछ वर्ष पहले जब भारत इसके 150 वर्ष का समारोह मना रहा था, कुछ ब्रिटिश नागरिक भारत आये और उन तमाम जगहों पर जाकर अपने उन पुरखों को याद किया जो 1857 में मारे गये थे।

युवराज ऐंड्र्यू इस अवसर पर नागालैंड की राजधानी कोहिमा में बने युद्ध स्मारक पर फूल चढ़ाने भी गये। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के समय मणिपुर व नागालैंड की पहाड़ियों और जंगलों में 4 अप्रैल से 22 जून 1944 तक चले संघर्ष में मारे गये अंग्रेज सेनाधिकारियों सहित 5 हजार सैनिकों को श्रद्धांजलि दी।

यहां के प्रमुख हिन्दी समाचार पत्र ने शीर्षक लगाया था – द्वितीय विश्व युद्ध में मारे गये सैनिकों को एंड्र्यू का सलाम। लेकिन यह नहीं बताया है कि यह सेनाधिकारी मरे कैसे। किसने उन्हें मारा। जिन्होंने उन्हें मारा, उनका क्या हुआ। अगर यह इतनी बड़ी ऐतिहासिक घटना है कि सात दशक बाद भी ब्रिटेन का शाही परिवार उसे भुला नहीं सका है तो उसका भारत के इतिहास से क्या रिश्ता है। इस युद्ध को भारत के इतिहास में किस रूप में दर्ज किया गया है। और अगर इतनी ऐतिहासिक घटना, जो भारत की धरती पर घटी, का पता भारत के ही नागरिकों को नहीं है तो इसका दोषी कौन है, यह आज भी अनुत्तरित है।

अभाविप का मोबाइल ऐप
डाउनलोड
करने की लिंक आपको
ABVP के
अधिकारिक अकाउंट
http://www.facebook.com/ABVPVOICE
https://twitter.com/abvpcentral
पर और वेबसाइट
www.abvp.org
पर भी उपलब्ध रहेगी।

आप (AAP) की जीत के मायने...

✍ श्रीरंग कुलकर्णी

कुछ दिनों पूर्व दिल्ली की विधान सभा में एक पार्टी ने 'न भूतो न भविष्यति' इस प्रकार की जीत दर्ज कर इतिहास रचा और मीडिया तथा पोलिटिकल पंडितों की अटकलों को झूठा साबित किया। उस पार्टी का नाम है 'आम आदमी पार्टी'!

देश के राजनीतिक पटल पर एक सफल विकल्प देने का सपना दिखाते हुए एक आंदोलन से 'आप' का उन्मेश हुआ। भ्रष्टाचार का विरोध, जनलोकपाल, आम आदमी से जुड़े मुद्दे, महिला सुरक्षा ऐसे विषयों को सामने रखकर वे लोगों के मन–मस्तिष्क में जगह बनाने में कामयाब हुए। आजकल राजनीति में कम दिखने वाले सादगी और जमीन से जुड़ाव जैसे मुद्दों को हथियार बनाते हुए उन्होंने कई पुरानी और मजबूत पार्टियों के बीच अपनी जगह बनायी। आज तक दिल्ली में अधिकतम 52 सीटें लेकर कांग्रेस ने सत्ता बनायी थी उसको भी पीछे छोड़ 70 में से 67 सीटों पर कब्जा कर 'आप' ने इतिहास रचा।

10 फरवरी को जब दिल्ली विधानसभा चुनाव के परिणाम आने लगे तो मुझे दिल्ली के बाहर से कई कार्यकर्ताओं के दूरभाष आने लगे जो तब मैंने नहीं उठाये। क्योंकि मै जानता था हर एक के मन में यही सवाल होगा कि भाजपा का इतना पानीपत कैसे हुआ? इससे पहले हुए चार राज्यों के परिणामों में भाजपा कमजोर होते हुए भी उसे सफलता मिली और इस पृष्ठभूमि पर नरेंद्र मोदी सरकार के केंद्र दिल्ली में इतनी करारी हार मन को कचोटने वाली थी। मैंने भी बाद में इस पर चिंतन करके कुछ निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया।

कांग्रेस का पतन, भाजपा के गलत निर्णय, केजरीवाल का चेहरा तथा 'आप' का संगठित कैंपेन दिल्ली में 'आप' की जीत के प्रमुख कारण रहे।

पूरे देश में दिल्ली की एक अद्वितीय स्थिति (Unique Status) हैं। इसके कारण उसकी अन्य राज्यों से तुलना नहीं हो सकती। उन मुद्दों को समझना पड़ेगा जिसके कारण 'आप' यहां जगह बनाने में कामयाब रही। राष्ट्रीय राजधानी होने का एक अपने आप में महत्त्व तो है ही। इसके कारण पुलिस–कानून व्यवस्था जैसे प्रदेश के कई विषय केंन्द्र के हाथ में है। 15 साल के शीला दीक्षित के कांग्रेसी शासन में जिस प्रकार से भ्रष्टाचार और दिल्ली की बदहाली हुई इसी के चलते यहां अण्णा हजारे जी के आंदोलन को अभूतपूर्व समर्थन मिला।

अभी 'आप' की जीत के कुछ कारणों को बारीकी से समझने का प्रयास करेंगे–

कांग्रेस का धराशायी होना : देश भर में कांग्रेस की हालत खस्ता है ही लेकिन दिल्ली के पिछले चुनाव में भी वो दहाई के आंकड़े को छू ना सकी। पिछले चुनाव में 'आप' को 31 प्रतिशत वोट मिले जो बढ़कर इस चुनाव में 54 प्रतिशत हुए जिसमें कांग्रेस का योगदान अधिक है। इसका कारण जानना भी रोचक होगा। इस बार कांग्रेस के कार्यकर्ता भी ये जान चुके थे कि किसी भी हालत में वह सत्ता में नहीं आ सकते। मतदान का राष्ट्रीय कर्तव्य तो करना है और निष्ठावान, परंपरागत कांग्रेसी होने के कारण भाजपा को तो वोट नहीं दे सकते। अतः उन्होंने

'आप' को वोट दिया। ऐसे 15 प्रतिशत कांग्रेसी वोट इस बार 'आप' को बिना प्रयास के मिल गये। इसी के साथ सभी 70 सीटों पर उम्मीदवार खड़े करने के बावजूद 'बहुजन समाज पार्टी' (बसपा) के भी 4 प्रतिशत और अन्य के 4 प्रतिशत वोट 'आप' को चले गये। लोकतंत्र में 50 प्रतिशत से ज्यादा वोट पाने वाली पार्टी को ही विजयी मानना चाहिए। यह बात बार–बार आती है। उसी प्रकार इस बार 'आप' को वोट मिले है। इसमें अब यदि भाजपा के बारे में देखे तो लगभग वह अपना जनाधार कायम रखने में सफल रही। हालांकि उसके एक प्रतिशत (0.9 प्रतिशत) वोट कम जरूर हुए हैं और बाकी पार्टियों के वोट लेने में भी वो नाकाम रही लेकिन अन्य पार्टियों से तो उसकी स्थिति काफी बेहतर रही। अतः सिर्फ तीन ही सीट जीतने के कारण अभी दिल्ली में भाजपा खतम हुई जैसे निष्कर्ष निकालना भी गलत होगा। इस बार तो कुछ सीटों पर पिछली बार से ज्यादा वोट लेने के बावजूद भाजपा के प्रत्याशी हारे हैं। यदि कांग्रेस ज्यादा वोट लेने में सफल होती तो उसका सीधा फायदा भी भाजपा को मिल सकता था।

भाजपा की गलत नीतियां तथा निर्णय : भाजपा ने इस विधान सभा का चुनाव तो पूरे दमखम से लड़ा लेकिन उनकी कई बातें उन पर ही बूमरांग हुई। घोषणा के शुरुआत के 2–3 दिनों में किरण बेदी को मुख्यमंत्री पद के दावेदार के रूप में केजरीवाल के सामने खड़ा करना कुल मिलाकर माहौल को बराबर करने वाला लगा लेकिन उसके परिणाम बाद में बहुत ही नुकसानदेह रहे। सालों से पार्टी में खप रहे नेताओं का मनोबल टूटा। मीडिया तथा लोगों के सामने किरण बेदी को संभालने की चुनौती भी खड़ी हुई। 12 से 15 सीटों पर आयातित (imported) उम्मीदवार खड़े करने के कारण कार्यकर्ता भी नाराज–निष्क्रिय हो गये। इस परिस्थिति से निपटने के लिये केंद्र ने मंत्री परिषद के दर्जनों मंत्री तथा अन्य राज्यों से सैकड़ो कार्यकर्ताओं को चुनाव प्रचार में लगाने का भी उल्टा असर हुआ।

एक और बात का बहुत नुकसान भाजपा को हुआ वो है ऐन वक्त पर उम्मीदवारों की घोषणा। इसके विपरीत 'आप' ने तो अपने उम्मीदवारों की घोषणा कुछ महीने पहले ही की थी। भाजपा के उम्मीदवारों ने जब अपने क्षेत्र में घूमना शुरू किया तब तक 'आप' के उम्मीदवार दो–तीन बार पूरे क्षेत्र का दौरा कर चुके थे और मतदाता नाम से उनको जानने भी लगे थे।

विश्वसनीय नेतृत्व : यह 'आप' के लिए सबसे मजबूत मुद्दा रहा। अरविंद केजरीवाल की छवि बहुत ही ईमानदार, सादगीपूर्ण और समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता की होने का उसने खूब फायदा उठाया। इसकी तुलना में कांग्रेस तथा भाजपा दोनों के पास विश्वसनीय नेतृत्व की कमी दिखी। शीला दीक्षित सरकार के राष्ट्रमंडल खेल तथा अन्य भ्रष्टाचार सर्वविदित है ही भाजपा के भी नगर निगम के भ्रष्टाचार को 'आप' ने खूब भुनाया। 49 दिनों की सरकार छोड़ जाने की गलती मानना और उसके लिये घर–घर जाकर तथा सार्वजनिक रूप से केजरीवाल द्वारा माफी मांगने का भी उनके लिये एक सकारात्मक परिणाम रहा। राजनीति में दांभिक तथा अकड़ वाले नेताओं की आदत को देखते हुए एक राजनेता द्वारा माफी मांगना समाज में एक सहानुभूति भी पैदा कर गया। और एक अतिरिक्त लाभ 'आप' के पास था वो है उनका राजनीति में नया होना। इसके कारण कोई विरोधी लहर (anti incumbency) और अन्य मुद्दे नहीं थे। और उनका आकर्षण भी था। इसी के कारण दिल्ली की जनता ने भारी बहुमत के साथ उनको जिताया।

संगठित और प्रभावी कैंपेन : अन्य पार्टियों की तुलना में संगठित तथा प्रभावी चुनाव प्रचार भी 'आप' के जीत का कारण रहा। देश भर से आये हुए डफलीवालों ने हर चौराहे पर 'पांच साल, केजरीवाल...' बजाकर और जगह–जगह हो रहे नुक्कड़ नाटकों ने माहौल उनके पक्ष में कर लिया था। हाई–फाई संस्कृति से परे रहते हुए, लोगों के बीच

डीयू में प्रदर्शनकारी छात्रों पर पुलिस ने किया लाठीचार्ज; नौ घायल

दिल्ली विश्वविद्यालय में शैक्षिक मांगों को लेकर हजारों छात्र सड़क पर

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् और दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) के आह्वान पर अपनी आठ मांगों को लेकर 27 फरवरी को चार हजार से अधिक विद्यार्थी 'डीयू बचाओ महारैली' में शामिल हुए। इन आठ मांगों में नए कॉलेज व हॉस्टल, यूनिवर्सिटी स्टेडियम को आम छात्रों के लिए खोलना, बीटेक की डिग्री को मान्यता दिलाना, यूनिवर्सिटी–स्पेशल बसें चलवाना, वातानुकूलित–बस में पास, स्पेशल चांस व सप्लीमेंट्री परीक्षा पुनः शुरू करना शामिल था।

आर्ट्स फैकल्टी के पास एकत्रित हुए विद्यार्थियों से एबीवीपी के राष्ट्रीय सह–संगठन मंत्री श्री श्रीनिवास ने कहा कि विश्वविद्यालय रचनात्मक दृष्टिकोण बढ़ाने वाले केंद्र बनने चाहिए ताकि देश का युवा देश के लिए सोचे और कार्य करे। विश्वविद्यालयों में रचनात्मक माहौल बनना चाहिए, लेकिन जब छात्रों को मूलभूत सुविधायें प्रदान नहीं की जाएगी तो उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ना पड़ेगा। और इसीलिए यहाँ एकत्रित छात्रशक्ति का मैं नमन और वंदन करता हूँ। सिर्फ कुछ पदाधिकारी बदलने से विश्वविद्यालयों में परिवर्तन नहीं आएगा बल्कि विश्वविद्यालयों के पूरे तंत्र को बदलने की आवश्यकता है ताकि शिक्षा को अधिक गुणवत्तापूर्ण और रोजगारपरक बनाया जा सके। रैली को डूसू पदाधिकारियों मोहित नागर, परवेश मलिक, कनिका शेखावत व आशुतोष माथुर के अलावा एबीवीपी के कई छात्र नेताओं और पदाधिकारियों ने भी संबोधित किया।

'सबको हॉस्टल देना होगा', 'स्पेशल चांस शुरू करो', 'बीटेक के छात्रों के साथ न्याय करो', 'डीयू वीसी होश में आओ', 'डीयू हमारा छात्रों का, वीसी की जागीर नहीं' जैसे नारे लगाते हुए और हाथों में तख्तियां लिए विद्यार्थियों ने इस सभा के बाद रैली निकाली जो दौलत राम कॉलेज, रामजस कॉलेज, हिन्दू कॉलेज होते हुए वीसी ऑफिस के समीप जा पहुंची। वीसी ऑफिस के समीप पुलिस द्वारा लगाए गए एक बैरिकेड को छात्रों ने उखाड़ फेंका किन्तु जैसे ही वे दूसरे बैरिकेड को तोड़ने का प्रयत्न करने लगे, पुलिस ने पानी की बौछारों और लाठियों से उन्हें रोका जिसमें नौ छात्र गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस द्वारा अमानवीय रूप से लाठियां सहने के बावजूद छात्र वीसी के खिलाफ नारेबाजी करते रहे और करीब एक घंटे तक यह संघर्ष चलता रहा। घायल छात्रों को हिन्दू राव हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया।

एबीवीपी के दिल्ली प्रदेश मंत्री साकेत बहुगुणा ने पुलिसिया कार्रवाई की निंदा करते हुए कहा कि जब भी हम छात्रों की समस्याएं लेकर वीसी साहब के पास जाते हैं तब तब हमारे सामने पुलिस को आगे कर दिया जाता है। दमन की नीति को परिषद् स्वीकार नहीं करेगी। यदि छात्रों की जायज मांगों को मान नहीं लिया जाता तो एबीवीपी और डूसू आने वाले दिनों में इस आन्दोलन को और तेज करेंगे।

जाकर प्रत्यक्ष संपर्क करके, सोशल मीडिया का बखूबी उपयोग तथा लोकलुभावन वादों से उन्होंने दिल्ली वालों के दिल में अपनी जगह बनायी। इसी के चलते चुनाव के दौरान उनके खिलाफ उठे मुद्दों का भी उन पर बहुत असर नहीं हो पाया। अपने प्रभावी कैंपेन के जरिये चुनाव जीतने के लिए सिर्फ धन बल तथा बाहु बल ही मापदंड नहीं हो सकते यह साबित करने में भी वे काफी हद तक सफल रहे।

इन मुद्दों के साथ ही मोदी जी के दस लाख के सूट का मुद्दा समाज में ठीक से भुनाने और भाजपा के विरोध में जनमत बनाने में 'आप' सफल रही। जिनके कुर्ते के स्वयं ओबामा फैन है और जिस देश की लगभग आधी आबादी रात को भूखी सोती है उस देश के प्रधानमंत्री का इतना मंहगा सूट पहनना लोगों को नागवार गुजरा।

दिल्ली में लगभग 40 प्रतिशत वोटर सरकारी (राज्य या केंद्र) कर्मचारी है। ऑफिस में बायोमेट्रिक सिस्टम बिठाना, 2 अक्टूबर की तथा कुछ लोगों की 25 दिसंबर की छुट्टी रद्द करने के कारण इन कर्मचारियों के मन में केन्द्र सरकार के प्रति गुस्सा था। और केजरीवाल अपना कुछ भला करेगा ऐसा भरोसा करते हुए अधिकतर लोगों ने 'आप' के पक्ष में वोट डाला। सरकारी कर्मचारियों की काम के प्रति गंभीरता और जबाबदेही सुनिश्चित करने के मोदी सरकार के कदम लंबे समय में देश को प्रगति पथ पर ले जाने में जरूर कारगर साबित होंगे। लेकिन इसकी आदत न होने के कारण आज उनको ये अखर रहा है जिसके विरोध में यह एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी।

और एक मुद्दा रहा मुस्लिम मतों का ध्रुवीकरण और उनका 'आप' को मिलना। आज तक कभी नहीं हारे ऐसे दूसरी पार्टियों के मुस्लिम प्रत्याशियों को तो इस बार हार का मुंह देखना पड़ा।

इन सभी कारणों का एक सामूहिक परिणाम (cumulative effect) दिल्ली में 'आप' की भारी जीत है। चिंता कांग्रेस को करनी पड़ेगी, चिंतन भाजपा को करना पडेगा लेकिन आने वाले समय में बड़ी चुनौती 'आप' के सामने हैं। सुशासन के साथ ही बिजली, पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाएं तथा महिला सुरक्षा जैसे विषयों में ठोस परिणाम देना और चुनावी घोषणापत्र के अपने बड़े–बड़े वादों को पूरा करने का दायित्व आज उन पर है।

अण्णा हजारे जी के जन आंदोलन के बाद जिस प्रकार 'आम आदमी पार्टी' का गठन हुआ तब लोगों को लगा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य की देश की राजनीति में एक उपयुक्त विकल्प मिला। तब केजरीवाल बाकी पार्टियों को ईमानदार राजनीति कैसी करनी है ये ह सिखायेंगे ऐसा कह भी रहे थे। उनकी सादगी, प्रमाणिकता, ईमानदारी, कर्मठता, मुद्दे पर अड़िग रहते हुए आंदोलन करना, मेहनत लोगों को अच्छी लगी। कई राजनीतिक पार्टियां घबरा गयी। लोकतंत्र में सक्षम विकल्प के नाते लोग उनकी तरफ देखने लगे। धीरे–धीरे उनका एक हव्वा खड़ा हुआ। लेकिन अपने आप को साफ और अगल दिखाने वाले 'आप' ने दिल्ली के चुनाव में नैतिकता तथा शुचिता के कई मापदंड़ों का उल्लंघन किया। जिसकी परतें खुल रही हैं, आने वाले समय में और भी खुलेंगी।

देश के इतिहास ने यह भी देखा है कि जनआंदोलन से जो भी पार्टी सत्ता में आयी है वो अधिक देर तक टिक नहीं पायी है और उसका बिखराव हुआ है। आपातकाल के आंदोलन के बाद 'जनता दल' हो फिर असम में आंदोलन के बाद बने 'ऑल असम स्टूडेंट यूनियन' (AASU) की सरकार हो उनका हश्र हमने देखा है और 'आप' के अंदर की वर्तमान गतिविधियों को देखते हुए भी यहीं प्रतीत हो रहा है। जिस प्रकार से उनकी पार्टी में बिखराव हुआ है उससे सिर्फ लोगों का ही नहीं उनके कार्यकताओं का भी विश्वास टूटा है। आने वाले समय में 'आप', 'जनता दल' या 'आसू' (AASU) की राह पर जायेगी या खुद को मजबूत करते हुए लोकतंत्र में स्वयं को एक अच्छा विकल्प साबित करेगी, यही देखना होगा।

उदयपुर में आठवें दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय महोत्सव में अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री
श्री सुनील आंबेकर को स्मृति चिह्न देकर स्वागत करते डा. आंनद पालीवाल

भोपाल में संपन्न 'साविष्कार' (i-FAST) में पुरस्कार प्राप्त टीम के साथ
मध्य प्रदेश विधान सभा अध्यक्ष श्री सीताशरण शर्मा व अन्य

RNI No. 32464/78

समय पर ऋण चुकाएँ
0% ब्याज का लाभ पायें

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति में समय पर ऋण चुकाने वाले किसान भाईयों के लिए 0% ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध

• किसान भाई ध्यान दें •

खरीफ फसल के लिए ऋण की
ड्यू डेट - 28 मार्च

रबी फसल के लिए ऋण की
ड्यू डेट - 15 जून

समृद्धि का आधार - सहकार

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2015